ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 11 नवम्बर 2018 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 11 नवम्बर 2018 से 17 नवम्बर 2018

कार्तिक शु. – 04 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 45, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पश्चिम बंगाल के तत्त्वावधान में स्वच्छता पखवाड़ा एवं विशेष यज्ञ

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पश्चिम बंगाल के सभी विद्यालयों के आर्य समाजों के द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। इसके अंतर्गत प्रत्येक दिन यज्ञ एवं अनेक गतिविधियाँ हुईं। कक्षा तृतीया से कक्षा द्वादश तक के विद्यार्थियों द्वारा इस स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत विद्यालय तथा जनसाधारण में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने का कार्य मुख्य रूप से किया गया।

देश के प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी की पहल के अनुसार डी.ए.वी. मॉडल स्कूल दुर्गापुर के मानव संसाधन शाखा ने ग्रीन स्कूल अभियान के तहत कक्षा नवमी और दशमी के विद्यार्थियों के द्वारा विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण किया एवं नीले तथा हरे रंग के कूड़ेदान की व्यवस्था की गई। स्वच्छता भागीदारी दिवस में स्वच्छ भारत अभियान पर आधारित चित्रकला प्रतियोगिता में कक्षा अष्टमी के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। हस्त प्रक्षालन को व्यक्तिगत स्वच्छता की श्रेणी में रखकर प्रयोगात्मक उपायों को करके बताया गया।

सामाजिक सहभागिता दिवस के अंतर्गत कक्षा सप्तमी, नवमी एवं एकादशी के विद्यार्थियों की एक रैली ने डी.एस.पी. मुख्य अस्पताल के सम्मुख जन–साधारण की सहभागिता से स्वच्छता अभियान को सफल बनाया। विद्यालय स्वच्छता प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। स्वच्छ जल दिवस में कक्षा पंचमी के विद्यार्थियों ने नाटिका के माध्यम से एक प्रयोग द्वारा पेय जल को पहचानने का उपाय बताया। जल संचयन दिवस में कक्षा षष्ठी के विद्यार्थियों द्वारा वर्षा के पानी का एकत्रीकरण, जल का महत्त्व एवं संकट के कारण विषयों को पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रस्तुत कर ज्ञानवर्धन कार्य किया गया। स्वच्छता ही सेवा दिवस में विद्यार्थियों ने पत्र के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया कि स्वच्छता को मानसिक शुद्धता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

इसी संदर्भ में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कन्यापुर आसनसोल में विद्यालय के एन.सी.सी. के विद्यार्थियों द्वारा विद्यालय प्रांगण में तथा आसनसोल शहर में अनेक स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाकर जन–साधरण को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया। दिल्ली दूरदर्शन चैनल की ओर से आयोजित 'मेरी गंगा' विषय पर आधारित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर के छात्र स्वस्तिका सिन्हा (कक्षा नवमी) एवं सायनदीप चक्रवर्ती (कक्षा नवमी) ने जोनल राउंड के सेमीफाइनल में पहुँचकर डी.ए.वी. स्कूल पश्चिम बंगाल प्रक्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किया। इस शुभ अवसर पर डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर में 'त्योहारों का महत्त्व' इस विषय पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आर्य समाज के सिद्धांतों को और वैदिक मान्यताओं को जनसाधारण तक पहुँचाने के लिए आर्य समाज डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, दुर्गापुर के सदस्यों ने अपने–अपने क्षेत्र में विशेष यज्ञ का आयोजन करना प्रारम्भ किया है।

इस सारे आयोजन के पीछे श्रीमती पापिया मुखर्जी, प्रधाना, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पश्चिमी बंगाल की प्रेरणा और मार्गदर्शन रहा। सुश्री कल्याणी नायक ने भी इसमें भरपूर सहयोग दिया।

डी.ए.वी. कॉलेज बठिण्डा में 'स्वास्थ्य मुद्दे' पर व्याख्यान

डी.ए.वी. कॉलेज, बठिण्डा के छात्र भलाई विभाग व आर्य समाज द्वारा विश्व हृदय दिवस' पर छात्रों को स्वास्थ्य के बारे जागरूक करने हेतु डॉ. अमन सालवान, दिल्ली हार्ट हास्पिटल डीएनबी. हृदयरोग विशेषज्ञ का 'स्वास्थ्य मुद्दे' विषय पर एक सार्थक व्याख्यान का आयोजन करवाया गया। कॉलेज प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा, स्टाफ सेकेटरी प्रो. महेषेन्द्र, प्रो. सतीश ग्रोवर ने आगुन्तकों का स्वागत पुष्पगुच्छ भेंट कर किया।

डॉ. अमन सालवान ने हृदय से संबंधित बीमारियों के कारणों पर प्रकाश डालने के साथ–साथ उनके संरक्षण के उपायों से भी छात्रों को अवगत कराया। उन्होंने कहा कि हृदय बीमारियों को नम्बर वन किलर कहकर संबोधित किया जाता है। इसलिए आवश्यक है कि हम इन बीमारियों

के प्रति जागरूक रह कर अपना संरक्षण करें। उन्होंने नशा, धुम्रपान, फास्ट फूट, मदिरापान, मिष्ठान, बेकरी वस्तुएँ व सिलण डरीकल जीवन शैली से परहेज करने को कहा। शुगर रोग, कैलोस्ट्राल, उच्च रक्तचाप आदि बीमारियों से बचने हेतु समय–समय पर अपने शरीर का चैकअप कराने की सलाह दी। उन्होंने विविध बीमारियों के लक्षणों से भी छात्रों को जागरूक करवाया। विभिन्न बीमारियों से बचाव हेतु गर्भावस्था के समय ही विभिन्न प्रकार के चैकअप करवाने की सलाह दी। श्री संदीप प्रचण्डा ने बठिण्डा शहर में उपलब्ध चिकित्सीय सुविधाओं के बारे में बताया। साथ ही छात्रों को अपने बड़े- बुजुर्गों को विभिन्न बीमारियों के प्रति जागरूक करने के बारे में कहा। उनका मानना है कि स्वस्थ नागरिकों से ही स्वस्थ देश बनता है।

कॉलेज प्राचार्य डॉ. संजीव शर्मा ने आगुन्तकों का इस सार्थक व्याख्यान के लिए धन्यवाद किया। उन्होने सुश्री पायल के इस आयोजन में महती भूमिका का निर्वाह करने के लिए धन्यवाद किया। साथ ही डॉ. अमन को भी ऐसे उपायों से छात्रों को अवगत कराने के लिए कहा जिससे कि वे स्वास्थ्य मार्ग की ओर बढ़ सकें। धन्यवाद ज्ञापन कॉलेज उपप्राचार्य प्रो. वरेश गुप्ता द्वारा किया गया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. ७

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 11 नवम्बर 2018 से 17 नवम्बर 2018

समित्पाणि शिष्य के उद्गार

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

एतास्ते अग्ने समिधः, त्वमिद्धः समिद् भव।
आयुरस्मासु धेहि, अमृतत्वमाचार्याय।।

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः** छन्दः **अनुष्टुप्।**

● **(अग्ने)** हे यज्ञाग्नि! **(एताः)** ये **(ते)** तेरे लिए **(समिधः)** समिधाएँ [हैं], [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [ब्रह्मचारियों] में **(आयुः)** जीवन, [और] **आचार्याय** (आचार्य) के लिए **(अमृतत्वम्)** अमरत्व **(धेहि)** प्रदान कर।

● मैं समित्पाणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूँगा, समिधाओं को एक–एक कर अग्नि में आहुति दूँगा।

हे यज्ञाग्नि! ये तेरे लिए समिधायें हैं, इनसे तू समिद्ध हो, सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त हो। देखो, ये शुष्क समिधायें, जो सर्वथा निस्तेज थीं, अग्नि में पड़कर प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। ऐसे ही मुझे भी आचार्य–रूप अग्नि का ईंधन बनकर ज्ञान एवं सत्कर्मों से प्रज्ज्वलित होना है। मैं निपट अबोध–अज्ञानी बालक अप्रज्ज्वलित समिधाओं के समान ही निस्तेज हूँ, आचार्याधीन गुरुकुल–वास करके मुझे ज्ञान की ज्वालाओं से प्रदीप्त होना है।

आचार्य और ब्रह्मचारियों के मध्य में जलनेवाली हे यज्ञाग्नि! तू हम ब्रह्मचारियों को आयु प्रदान कर, हमारे अन्दर जीवन निहित कर। हम यही नहीं जानते कि इस संसार में किसलिए आये हैं और हमें कहाँ जाना है तथा जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। जीवन जीने की कला का बोध तू हमें करा। हे अग्नि! तू गुरुकुल की गुरु–शिष्य परम्परा का उज्ज्वल प्रतीक है। जो समिधाओं का और तेरा सम्बन्ध है, वही घनिष्ठ सम्बन्ध गुरुकुल में गुरु और शिष्यों का है। गुरुकुल के व्रतपालन, गुरुकुल की दिनचर्या, गुरुकुल के ज्ञानाग्नि–समिन्धन, गुरुकुल की कर्मपरायणता, गुरुकुल की तपस्या, गुरुकुल के संयम, गुरुकुल के योगानुष्ठान आदि सबका तू प्रतीक है। हे व्रतपति अग्नि! तुझमें समिधायें डालते हुए हम इन समस्त भावनाओं को अपने हृदय में धारण करते हैं।

हे गुरुकुलीय अग्निहोत्र की अग्नि! जहाँ तू हमें जीवन प्रदान करेगी, वहाँ हमारे आचार्य को अमृतत्व प्रदान कर। हम ही अपने आचार्य को मार सकते या अमर कर सकते हैं। हम तुझ अग्नि में तपकर ऐसे जीवन के धनी बनें कि हमसे आचार्य की कीर्ति चारों ओर फैले। जब कोई हमें गुणी और सत्कर्मनिष्ठ देखकर पूछेगा कि ये किस आचार्य के शिष्य हैं, तब हमारे आचार्य का नाम अमर होगा। हम यदि आचार्य के नाम को अमर करने में किंचिन्मात्र भी कारण बन सकेंगे, तो हम अपने को धन्य समझेंगे। हे गुरुकुल के अग्नि! तुम्हारी जय हो, हे गुरुकुल के पुण्यश्लोक आचार्य! तुम्हारी जय हो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भगवान शंकर और दयानन्द

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में स्वामीजी ने बताया कि सदा ईश्वर को स्मरण रखना, उसके नाम का जाप करना। जहाँ वेद प्रत्येक मानव को पहुँचने का सन्देश देता है। वेद कहता है, "तुममें से कोई छोटा या बड़ा नहीं, ईश्वर ने सबको एक–जैसा बनाया है। मिलकर आगे बढ़ो, सौभाग्य और आनन्द के लिए, सुख और शान्ति के लिए।" मन के सम्बन्ध में दो बातें कहनी हैं। मन भी जड़ है। इस जड़ वस्तु के पीछे भागते फिरें।

दूसरी बात यह है कि मन बनता कैसे है? जो अन्न हम खाते हैं उससे मन बनता है। जो कुछ भी हम खाते हैं, शरीर के अन्दर जाकर उसके तीन भाग हो जाते हैं। सबसे ठोस भाग मल बनकर निकल जाता है। उसके सूक्ष्म भाग से शरीर की शक्ति बनती है। सबसे सूक्ष्म भाग मन बन जाता है। इसलिए कहते हैं कि जैसा अन्न खाओगे वैसा मन बनेगा।

अब आगे ...

तीसरा दिन

मेरी प्यारी माताओ तथा सज्जनो!

पिछले दो भाषणों में हमने पहली बात यह देखी कि जगद्गुरु शंकराचार्य और महर्षि दयानन्द एक ही मिशन को लेकर आगे बढ़े। दोनों ने मानव को ऊपर उठाने और संसार में शान्ति लाने का साधन ब्रह्मजिज्ञासा को बताया। दोनों ने यह भी बताया कि ब्रह्म को खोजने से पूर्व जिज्ञासु में चार गुण होने चाहियें। इन चार गुणों में से एक गुण है 'षट् सम्पत्ति'। पहली सम्पत्ति का नाम है 'शम'। वह शक्ति कि मनुष्य प्रत्येक दशा में शान्त रहे। प्रत्येक दशा में शान्त रहने के लिए मन को वश में रखना अत्यावश्यक है। मन को वश में रखने के चार साधन मैंने कल बताये। उनमें से एक है संसार की वास्तविकता को समझना; आत्मा क्या है, अनात्मा क्या है, इस बात को जानना। दूसरा साधन है अच्छे विचारों को जगाना। तीसरा साधन है त्याग। चौथा साधन है हर समय ईश्वर को याद रखना है, उनके नाम का जाप करना। पाँचवाँ साधन है उत्तम अन्न का सेवन। छठा साधन आज बताऊँगा। जिन लोगों के मन में नित्य चिन्ता रहती है, जो हर समय चिन्ता के सागर में डूबे रहते हैं, वे इस साधन को ध्यानपूर्वक सुनें। साधन यह कि अपनी आवश्यकताओं को कम करो। प्राचीन काल में हमारे पूर्वज कहते थे कि आवश्यकताओं को कम करने से शान्ति होती है। हमने यह समझ रखा है कि आवश्यकताओं को बढ़ाने में ही कल्याण है। पहले हम आवश्यकताओं को बढ़ाते हैं, फिर इन्हें पूरा करने के लिए धन कमाना आरम्भ करते हैं। घर में देवी कमाती है, 'देव' भी कमाता है, फिर भी आवश्यकताएँ पूरी नहीं होती। तब चिन्ताओं के बादल उमड़ आते हैं। हर समय "और लाओ, और लाओ" की पुकार होती रहती है। अरे यह 'मनुवा राम' है न, इसको ढीला मत छोड़ो! एक बार इसको ढील दोगे तो फिर यह तुम पर छा जायेगा, अमर बेल की भाँति। वृक्ष नहीं बढ़ेगा उस समय, बेल बढ़ेगी। जिस वृक्ष पर अमर बेल छा जाये, वह वृक्ष सूख जाता है। जिस मनुष्य पर मन की अमर बेल छा जाये, उसकी आत्मा दुःखी हो उठती है। मन वश में करने और शान्त रखने का उपाय केवल एक है कि अपनी आवश्यकताओं को कम करो। यह शरीर है तुम्हारा, इससे तुमको कार्य लेना है। इसे भोजन खिलाओ अवश्य, परन्तु इसकी क्या आवश्यकता है कि भोजन के साथ उसको चटनी, मटनी, खटनी भी खिलाते जाओ, और पेट के अन्दर एक 'अखिल भारतीय भोजन सम्मेलन' आरम्भ कर दो? जब तुम बहुत–सी चीज़ें एक–साथ खा लेते हो तो जानते हो कि पेट में क्या होता है? भिण्डी एक ओर जाके बैठ जाती है, कहती है, "मुझे तो देर में पचना है, मैं बैठती हूँ, तुम पच लो।" आलू कहते हैं, "हम भी विश्राम करेंगे, अभी तो बहुत–सी वस्तुएँ पचने के लिए हैं, हमें जल्दी क्या है!" मूँग की दाल कहती है, "मैं तो झट पच जाती हूँ, मेरे लिए जल्दी क्या है, दूसरे आग में पड़ें। वे पच जायें तो मैं बढ़ूँगी।" इस प्रकार उनका झगड़ा होता है। कुछ भी नहीं पचता है। तब पेट खराब होता है, रोग आते हैं। रोगों को दूर करने के लिए डॉक्टरों के पास जाना पड़ता है, ओषधियाँ क्रय करनी पड़ती हैं, उन पर रुपया खर्च होता है, तब रुपया कमाने की धुन सवार होती है। उत्तम उपायों से रुपया न मिले तो लोग बेईमानी से कमाने का प्रयत्न करते हैं। कहाँ से आरम्भ होकर कहाँ पहुँच जाती है बात! तब आरम्भ में ही अपनी आवश्यकताओं को कम क्यों न करो? थोड़ा क्यों नहीं खाओ? याद रखो, मन को वश में करना है और चिन्ताओं से मुक्ति प्राप्त करनी है तो आवश्यकताओं को कम करो, उन्हें बढ़ाओ नहीं। छः साधन हैं मन को वश में करने के। इन पर चलकर देखिए। मन आपके वश में आयेगा निश्चित रूप से।

शेष पृष्ठ 03 पर ☞

आत्महत्या क्यों?

● भद्रसेन

जबकि प्रत्येक प्राणी विपरीत से विपरीत परिस्थिति में भी जीना चाहता है। फिर भी आए दिन किसी न किसी की आत्महत्या की घटना सामने आती रहती है। ऐसी स्थिति में यह सोचना आवश्यक हो जाता है, कि एक के पश्चात् एक आत्महत्या की घटना क्यों घटित हो रही हैं? ये समाचार जिस प्रकार से सामने आ रहे हैं। उनमें इन दिनों अधिकतर वृतान्त किसानों के रहते हैं, जिनमें यह बात सामने आती है, कि उसने लाखों में ऋण लिया हुआ था। वह उसको उतारने में अपने आपको असमर्थ समझने लगा। उसने अनेक प्रकार की मेहनत की पर वह फिर भी सफल न हुआ। अतः वह उदास, हताश, निराश होता चला गया। इस हताशा में वह आए दिन अपने आप को एक डूबते हुए की तरह अधिक से अधिक उस उधार में डूबता हुआ अनुभव करने लगा। उससे उभरने का जब उसे कोई रास्ता समझ न आया तो उसने तब समझा कि इन तकाजों से बचने का एक ही ढंग है, कि अपने आप को किसी प्रकार से खत्म कर लिया जाए। इन निराशा भरे विचारों में उसको मौत को ही गले लगाना सरल लगा।

हारिए न हिम्मत– ऐसी परिस्थिति में पड़े हुओं को, समझदारों का सुझाव है कि 'हारिये न हिम्मत', हिम्मत शब्द प्रकरण के अनुरूप अनेक भावों को अभिव्यक्त करता है। हिम्मत का एक अर्थ विचारने पर, **न घबराने**, धैर्य धारण करने, सब्र से काम लेने जैसे भावों को दर्शाता है। ऐसे ही आगे बढ़ने, साहस दिखाने, हौसला रखने जैसे भावों को भी देता है। ऐसे ही कभी हिम्मत करो द्वारा मेहनत, पुरुषार्थ की प्रेरणा देता है। कभी कहीं विचारपूर्वक विश्वास रखने का सन्देश देता है।

त्याज्यं न धैर्यं विधुरेऽपि काले–

भर्तृहरि ने नीतिशतक में जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए एक से एक अनूठे सुझाव देते हुए कहा है, कि अनेक बार जीवन जीते हुए किसी न किसी क्षेत्र में अलग–अलग समय पर विविध प्रकार की विपरीत परिस्थितियाँ आ जाती हैं। ऐसे अवसर पर प्रत्येक को धैर्य नहीं खोना चाहिए। धीरज रखते हुए उस संकट से निकलने, पार होने का मदन करना चाहिए। **यतोहि** तब हाथ–पैर मारने से **स्थितिमप्नुयात् सः** अर्थात् मुसीबत में पड़ा हुआ किनारे लग जाता है। हो सकता है यत्न करते रहने पर कोई सहायक सामने आ जाए या बचाव का कोई रास्ता प्रकट हो जाए। इतना ही नहीं अपितु भर्तृहरि भरोसा देते हुए कहते हैं कि **सांयात्रिको वाञ्छति तर्तुमेव**–अर्थात् प्रत्येक प्राणी अपने प्राणों से प्यार करता है। अतः वह स्वाभाविक रूप से उसमें विकट से विकट काल में बचने की भावना जागती है। वह यथामति–यथाशक्ति गले की मुसीबत को दूर करने का जैसा–कैसा यत्न करता है।

धैर्य, धीरज शब्द धीर से बनते हैं। **धी**–बुद्धि, समझ, अकल =वाला अर्थात् विचारने वाला। अतः इसका अभिप्राय हुआ कि संकट में सोच–विचार कर विशेष यत्न करना चाहिए। धीरज–धीर से 'ज' लगने पर धीरज बनता है। जिसका सन्देश हुआ कि धीर=समझ वाले को विपरीत स्थिति में विशेष सूझ, होश जगाना, प्रकट करना चाहिए। तभी समस्या का समाधान सामने आ सकता है। सोचते रहने से ही हल निकलने की आशा की जा सकती है।

जीवन्नरो भद्रशनामनिपश्चयेत्– संस्कृति के एक कवि ने एक अनोखा सन्देश देते हुए कहा है कि– **संकट यस्तो!** हताश–निराश–उदास हुआ! किसी भी स्थिति से घबरा कर अपने अनमोल जीवन को न गवाओ, क्योंकि हम जीते जी ही पुरुषार्थ से ही एक के पश्चात् एक अच्छाइयों, चाहनाओं को प्राप्त कर सकते हैं। जैसे कि कोई स्वस्थ ही प्रत्येक क्षेत्र में अवसर पर प्रगति करता है, न कि रोगी। ऐसे ही जीते जी ही कोई कुछ कर सकता है। मौसम के अनुकूल न होने से या बीज आदि में इस बार धोखा हो जाने से फसल, उपज अच्छी नहीं होने से, यह संकट सामने आ गया, पर हो सकता है, अगला मौसम अच्छा आ जाए। आपके जीवित (जीते) रहने पर ही आपके परिवार और बच्चों को आपके अनुभव, पुरुषार्थ का लाभ मिल सकता है। आपस के सहयोग से समस्या का हल निकाला जा सकता है। अतः घबराहट, डर को दूर करके हिम्मत से काम लो। इस बार से पहले जैसे अनेक बार अच्छी फसल, उपज हुई, ऐसे ही आगे भी अच्छे की आशा की जा सकती है। इसलिए निराशा को छोड़कर हिम्मत से काम लो। पुरुषार्थ का फल अच्छा ही होगा। किसानों की तरह अनेक बार असफल छात्र अपने आप को, आप ही इस जीवन, संसार से ओझल हो जाते हैं। जबकि पहली बार कहीं तो दूसरी बार में पहले से, हर प्रकार से अच्छी सफलता मिल जाती है। और परीक्षा प्रायः पाँच–छः मास या एक वर्ष पश्चात् पुनः होती रहती है। फिर कुछ मास के लिए अनमोल अवसरों से भरे जीवन को हाथ से गवाना बहुत बड़े घाटे का अवसर या सौदा बन जाता है। जीते रहने पर एक के बाद एक प्रगति का अवसर प्राप्त होता है।

ऐसे ही कुछ लोग बीमारी से घिर जाते हैं, इलाज कराने पर भी जब अन्तर नहीं आता तो वे घबरा जाते हैं और तब अपने जीवन को आप ही खो देते हैं। जबकि आज उपचार के एक से बढ़कर एक चिकित्सक तथा प्रगतिशील प्रणाली सामने आ चुकी हैं।

ऐसे ही कोई समय पर नौकरी न मिलने पर और कोई कारोबार में घाटा आ जाने पर इतना निराश,हताश, उदास हो जाता है कि उसे अपने चारों ओर अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देता है, तब वह और कोई रास्ता, आशा न दिखाई देने पर मौत को गले लगा लेता है।

इस प्रकार इन होने वाली आत्महत्याओं पर सामूहिक स्तर पर सोचते हैं तो एक साँझा कारण असफलता ही सामने आता है। अर्थात् जो व्यक्ति जिस–किसी क्षेत्र में कार्य करता है, हाथ–पैर मारता है तब वह सफल न होने पर घबरा जाता है और वह तब घबराहट में कुछ कर लेता है, जो उसे नहीं करना चाहिए था। इस बेचैनी से बचने का एक ही रास्ता है कि वह पहली बार ही सफलता को हाथ में न आया देखकर हताश–उदास–निराश न हो। इसके लिए धैर्य, हिम्मत से उसे काम लेना चाहिए था। क्योंकि सफलता फिर भी प्राप्त की जा सकती है। जीते रहने पर सफलता के अनेक अवसर एक के बाद एक सामने आ जाते हैं।

अतः अच्छा हो आगे से आगे अच्छे की आशा रखते हुए हिम्मत करो, धैर्य से सोचो और समस्या का समाधान प्राप्त करो। संसार में जहाँ मुश्किलें हैं वहाँ उनके हल भी हैं। अतः आओ! बिना घबराये मुश्किलों का हल निकालें।

सभी को यह स्मरण करना चाहिए कि इतिहास में ऐसे सैंकड़ों उदाहरण हैं। जब हम से हर तरह से अधिक संकट ग्रस्तों ने संघर्ष करते–करते अन्त में सफलता प्राप्त की। अतः ऐसी घटनाओं को कभी भूलना नहीं चाहिए।

182–शालीमार नगर,
होशियारपुर–146001
मो. 09464064398

☞ पृष्ठ 02 का शेष

भगवान शंकर और ...

'शम' के गुण को उत्पन्न करने के लिए, इस महान् सम्पत्ति को प्राप्त करने के लिए, दूसरा उपाय है योग–साधन। योग का अर्थ है व्यष्टि को समष्टि में मिला देना। एक मन आपके अन्दर है, इसी प्रकार का एक मन सारे विश्व में फैला है, उसे समष्टि बुद्धि कहते हैं। एक चित्त आपके अन्दर है, इसी प्रकार का एक समष्टि चित्त बाहर है समस्त संसार में। एक प्राण आपके अन्दर है, इसी प्रकार का एक समष्टि प्राण है सारे संसार में। अपने मन को, बुद्धि को, चित्त और प्राण को विश्व में फैले हुए इस समष्टि मन, समष्टि बुद्धि, समष्टि चित्त और समष्टि प्राण के साथ मिला देने से योग का पहला अंग पूर्ण होता है। ऐसा करने से 'शम' की सम्पत्ति उत्पन्न होती है।

आप कहेंगे कि यह व्यष्टि और समष्टि की बात तो समझी, परन्तु ऐसा करने का उपाय भी तो बताओ। मैं उपाय भी बताऊँगा। ऐसा उपाय है जिसे सीखने और प्राप्त करने में साधु लोग वर्षों लगा देते हैं। मैं आपको कुछ वाक्यों में बताऊँगा; फिर करना–न–करना आपका कार्य है।

देखिये, प्रातः 3 से 6 बजे तक का समय 24 घंटों में सबसे उत्तम समय होता है। इस समय में नहा–धोकर, नहीं तो मुँह–हाथ धोकर एक स्थान पर बैठ जाओ। ऐसे स्थान पर बैठो जहाँ ध्यान, भक्ति और यज्ञ के अतिरिक्त और कुछ न होता हो। परन्तु प्रतिदिन उसी स्थान पर बैठो। कोई भी अन्य बात वहाँ न होने दो। यदि बड़ा घर है तो एक कमरा इस कार्य के लिए निश्चित करो। घर बड़ा नहीं है, एक कमरा ही है तो उसके एक भाग को इस कार्य के लिए निश्चित करो। अपने समक्ष धूप या अगरबत्ती जलाओ, घी का दीपक जलाकर रख लो, पानी का लोटा रख लो और बैठ जाओ एक आसन से। एक आसन का अर्थ है बैठने की ऐसी विधि जिसमें साधक अधिक–से–अधिक समय तक बिना किसी कष्ट के बैठ सके। सदा एक ही आसन पर बैठो। पद्मासन, सिद्धासन, शवासन, ऐसे कई आसन हैं। इन सबमें से किसी एक आसन को अपना लो। उसको अपनाये रखो। सिद्धासन और पद्मासन उत्तम हैं। उनमें पालथी मारकर पीठ और ग्रीवा को एक सीध में रखकर बैठना होता है।

परन्तु आजकल तो विचित्र समय आ गया है न! कई स्थानों में लोगों को पालथी मारना ही भूल गया है। मैं अफ्रीका में गया, वहाँ कुछ लोग पालथी मारना ही नहीं जानते। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि जो लोग सिद्धासन या पद्मासन से नहीं बैठ सकते, वे योग के मार्ग पर चल ही नहीं सकते। जो लोग पालथी न मार सकें, उनके लिए अच्छा है कि वे शवासन को अपना लें। शव कहते हैं लाश को। लाश की भाँति लेट जाओ। पाँव के अँगूठों को कपड़े का छल्ला बनाकर उसमें डाल दो, कमर के ऊपर कपड़ा लपेटकर हाथों को कपड़े के अन्दर डाल दो, जिससे हाथ और पाँव न हिलें। और फिर चित्त लेटे रहो। इसको शवासन कहते हैं। परन्तु इस आसन को अपनाओ या किसी अन्य आसन को, जिसे अपना लो उसे छोड़ो नहीं, सदा उसको अपनाये रखो। आसन लगाने के पश्चात् पाँच बार गायत्री मन्त्र का जाप इस प्रकार करो कि तुम्हारे कान तुम्हारी आवाज़ को सुन सकें। फिर आँखें बन्द करके पाँच बार इस प्रकार जाप करो कि होंठ हिलें, आवाज़ सुनाई न दे। तब होंठ भी बन्द कर दो। पाँच बार इस प्रकार जाप करो कि बन्द

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

महर्षि दयानन्द का धर्मोपदेश

● भावेश मेरजा

(बाबू श्री देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय संकलित एवं पण्डित श्री घासीराम जी रचित 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित' ग्रन्थ से संकलित उपदेश।)

1. 'अग्नि' शब्द की व्युत्पत्ति से जिन-जिन गुणों का वह वाचक है वह गुण परमेश्वर में है, अतः 'अग्नि' परमेश्वर का वाचक है।
2. प्रथम तो किसी प्रामाणिक ग्रन्थ में 'त्रिकाल सन्ध्या' का विधान नहीं पाया जाता। दूसरे, सन्ध्या के अर्थों से भी सिद्ध होता है कि दो ही काल करनी चाहिए। यदि मध्याह्न की सन्ध्या मानी जाए तो फिर अर्ध रात्रि की चौथी भी माननी चाहिए और फिर प्रहर-प्रहर, घड़ी-घड़ी की भी माननी उचित है। इस प्रकार तो कोई समय रहता ही नहीं, हर समय सन्ध्या ही करते रहना चाहिए। सन्ध्या दो ही समय की है और यही ऋषि-मुनियों का सिद्धान्त है।
3. मूर्तिपूजा का खण्डन मैं नहीं करता, वरन् तुम (मूर्तिपूजक लोग) करते हो! तुम देवता को घण्टा आदि दिखाकर नैवेद्य आदि स्वयं चट कर जाते हो। इस कारण तुम वास्तव में 'पूजारि' (पूजा के अरि अर्थात् शत्रु) हो! तुम देवता से कहते हो – **'इमां घण्टां त्वं गृहाण भोजनमहं गृह्णामि'** अर्थात् तू तो यह घण्टा ले, भोजन मैं लेता हूँ।
4. (मुक्ति अनन्त है या सान्त) इस विषय पर हमने बहुत विचार किया है और सांख्य शास्त्र के प्रमाणानुसार हमें मुक्ति सान्त ही माननी पड़ी। जब जीव का ज्ञान परिमित है तो मुक्ति, जो उसका फल है, अपरिमित वा अनन्त कैसे हो सकती है?
5. मेरा उद्देश्य सबको ऐसे आपस में मिलाना है जैसे जुड़े हुए हाथ। मैं कोल से ब्राह्मण तक में जातीयता की ज्योति जगाना चाहता हूँ। मेरा खण्डन हित और सुधार के लिए है।
6. यदि आर्य अकेला हो तो स्वाध्याय करें, दो हो तो आपस में प्रश्नोत्तर और संवाद करें और तीन वा अधिक हो तो परस्पर सत्संग और किसी धार्मिक ग्रन्थ का पाठ करें।
7. मैं ब्रह्मसमाजियों की भाँति समाज के जातीय जीवन से अलग होना नहीं चाहता। समाज में रह कर ही उसका संशोधन करना श्रेयस्कर है।
8. आपका यह कहना 'मैं किसी मत को नहीं मानता' – यह अर्थ रखता है कि यही (किसी मत को नहीं मानना) आपका मत है।
9. मुक्ति का नित्य (अनन्त) होना असम्भव है और जीव का परमेश्वर में मिल जाना भी असम्भव है। जीव अल्पज्ञ है और परमेश्वर सर्वज्ञ। दोनों के गुण पृथक् हैं, अतः दोनों एक दूसरे में मिल कर एक नहीं हो सकते।
10. आप मद्य मांस का सेवन करते हुए योगाभ्यास का सेवन नहीं कर सकते। यदि आप इन वस्तुओं का त्याग कर दें और नियम पालन करते हुए योगाभ्यास करें तो सफल हो सकते हैं।
11. मैं गुरुआई की प्रथा को अच्छा नहीं समझता, परन्तु यदि तुम मेरे चेले बनना चाहते हो तो संस्कृत पढ़ो और जब प्राप्त-वयस्क हो जाओ तो वैदिक सच्चाइयों का प्रचार करो।
12. शरीर के बल सम्पादन के लिए मांसाहार की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। दाल, रोटी, शाक और दुग्ध आदि से शरीर में बल और बुद्धि दोनों का ही प्राचुर्य हो सकता है।
13. पहले आर्यगण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके विद्योपार्जन करते थे इसलिए वे वलिष्ठ और दीर्घायु होते थे। अब के मनुष्य इन्द्रिय-दोष और पान-दोष में आसक्त होकर शारीरिक और मानसिक तेज से हीन हो गए हैं और अल्पायु भी हो गए हैं।
14. हम स्त्रियों में व्याख्यान देना पसन्द नहीं करते। उनके पति आदि हमारा व्याख्यान सुन जाएँ और उन्हें जाकर बतला देवें।
15. मैंने तो सब संसार से सम्बन्ध त्याग दिया है। किसी का मरना और जीना मेरे लिए एक-सा है। मैं किसी से शोक वा हर्ष नहीं करता, न मेरा कुछ सम्बन्ध है। मेरा सम्बन्ध तो केवल उपदेश और धर्म से है, शेष किसी वस्तु से नहीं।
16. (एक ईसाई पादरी से वार्तालाप करते हुए) सत्य वेदोक्त धर्म में ईश्वर के अवलम्बन से ही मोक्ष होता है। महाभारत में लिखा है कि शुक्राचार्य ने संजीविनी विद्या से मृत पुरुषों को जिलाया था! अब हम शुक्राचार्य को ईश्वर का अवतार मानें वा उन्हें ईश्वर का भेजा हुआ मानें? यदि उत्तम उपदेश देने से ही ईसा को परित्राता कहते हो तो बाइबिल की अपेक्षा भगवद्गीता में अधिक उत्तम उपदेश हैं, इसलिए भगवद्गीता के वक्ता श्रीकृष्ण भी परित्राता हैं। यदि कहते हो कि ईसा इसलिए परित्राता थे कि उन्होंने उत्तम कर्म किये थे, तो शंकराचार्य अपेक्षाकृत उत्तमोत्तम कर्म कर गए हैं, इसलिए शंकराचार्य भी परित्राता हैं।
17. भारतवासियों को आर्य भाषा (हिन्दी) का सीख लेना कुछ कठिन नहीं है। जो इस देश में जन्म लेकर अपनी भाषा के सीखने का परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है?
18. प्रथम तो मुझे ही विचार हुआ था कि मूर्तिपूजन केवल अविद्या अन्धकार है, परन्तु गुरुवर्य स्वामी विरजानन्द जी भी उसका खण्डन किया करते थे और कहा करते थे कि कोई हमारा शिष्य ऐसा हो जो इस अन्धकार को देश से दूर करे। उनके आदेश से मैंने वैदिक धर्म प्रचार का कार्य अपने ऊपर लिया है।
19. तीर्थों की जो वर्तमान दशा है उसकी प्रयोजनीयता मैं कुछ नहीं देखता हूँ। यह तो केवल जीविकोपार्जन के निमित्त पण्डों ने एक ठाठ खड़ा कर रखा है।
20. सुख-दुःख के भोग का नाम कर्मफल है। जिस भोग का हेतु इस जन्म में ज्ञात न हो उसे पूर्वजन्मकृत कर्म का फल मानना चाहिए। आर्यों का धर्म शास्त्र यही बताता है और यही युक्ति से भी सिद्ध है।
21. जब कोई श्रोता किसी वक्ता का व्याख्यान सुने तो उस पर खूब मनन करके यह जानने का यत्न करना चाहिए कि उसके कथन में कितना सत्य है और कितना असत्य। यह जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहिए।
22. मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं यह नहीं चाहता कि जो कुछ मैं कहूँ आप उस पर आँखें मीच कर चलने लगें। आप उस पर विचार करें, उसे जाँचें और परखें। यदि वह आपको सत्य जान पड़े तो उस पर चलें और यदि वह असत्य जान पड़े तो उस पर कोई ध्यान न दें। यह अन्ध विश्वास ही हमारे नाश का मूल है। संस्कृत पुस्तकों में ज्ञान का वृहत् कोष भरा हुआ है। उन्हें पढ़ो और देखो कि उनमें क्या है। ऐसा मत कहो कि कोई बात केवल इसलिए माननीय या त्याज्य है कि दयानन्द सरस्वती ऐसा कहता है।

8-17 टाऊनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच, गुजरात-392015, मो. 9879528247

वह कौन है?

घन घोर तिमिर का वक्ष चीर-भू पर उतरी थी एक किरन
संदेश सवेरे का लाई-हम करते उसका अभिनन्दन
जड़ता के पूजन अर्चना ने – जब चिन्तन का अपमान किया
तूने मानव के मन में-चेतना का आवाह्न किया
जंजीरों से जकड़े स्वदेश को-राह दिखाई थी तूने
जिसको न काल भी बुझा कसा-वो शमा जलायी थी तूने
घन घोर तिमिर के आंगन में-तू बीज ऊषा के बोता था
आवाज़ लगायी थी तूने-जब सारा भारत सोता था

कर दिया स्वराज का शंख ध्वनित-तूने देश की वाणी में
तप त्याग तेज के अंगारे-पाले अनमोल जवानी में
तूने अनाथ की आह सुनी-विधवाओं का क्रन्दन देखा
तूने दोपहरी के नयनों में-लहराता सावन देखा
तू अगर न बनता प्रबल वेग-निष्ठा स्वराज की आंधी का
कभी न पूरा हो सकता सपना सपना-भारत में गांधी का
तू महादश का निर्माता-भारत का भाग्य विधाता है
इस धरती का कवि कोई श्रद्धा के पुष्प चढ़ाता है

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
प्रचार कार्यालय अमरोहा
फोन नं. 0592-2263412

स्यूमरश्मि भार्गवः ऋषिका

● शिवनारायण उपाध्याय

स्यूमरश्मि भार्गव का सम्बन्ध भृगुवंश से है। ये ऋग्वेद मण्डल 10 के सूक्त 77 व 78 की दृष्टा हैं दोनों सूक्तों में आठ–आठ ऋचाएँ हैं। इस प्रकार स्यूमरश्मि भार्गव का 16 ऋचाओं पर कार्य है। इन सभी ऋचाओं में प्राण साधना पर विचार किया गया है। दोनों सूक्तों के देवता मरूत हैं। हम पाठकों के लिए दोनों सूक्तों से पाँच–पाँच ऋचाएँ दे रहे हैं।

अभ्रप्रुषो न वाचा प्रुषावसु हविष्मन्तो न यज्ञा विजनुषः।
सुमासतं न ब्रह्माणमर्हसे गणमस्तोष्येषां न शोभसे ।।

ऋ. 10.77.1

अर्थः– जैसे आधिदेविक क्षेत्र में मरूत बादलों से सम्पूर्ण क्षेत्रों को सिक्त करने वाले हैं, उसी प्रकार अध्यात्म क्षेत्र में प्राण वेद वाणी के द्वारा हमें ज्ञान से परिपूर्ण करने वाले हैं। जिनमें उत्तम हव्य पदार्थ डाले गये हैं, उन यज्ञों के समान ये मरूत धनों को विविध रूप में उत्पन्न करते हैं। यह सचमुच ही मेरे दौर्भाग्य की बात है कि योग्यता के सम्पादन के लिए बुद्धि के कारणभूत मरूतो के इस शुभ गुण को मैंने आज तक प्रस्तुत नहीं किया है। इन मरूतों के गुण की शोभा की प्राप्ति के लिए मैं स्तुति नहीं कर पाया।

श्रिये मर्यासो अञ्जीर कृण्वत सुमारूतं न पूर्वीरति क्षपः।
दिवस्पुत्रास एता न येतिर आदित्यासस्ते अक्रा न वावृधः ।।

मनुष्य शोभा की प्राप्ति के लिए आभारणों का उपयोग करते हैं परन्तु इस उत्तम मरूतों के (प्राणों के) गण को बहुत से शत्रु भी नहीं लाँघ पाते हैं। इन मरूतों की साधना करने वाले लोग ज्ञान के पुतले बनते हुए गतिशील व्यक्तियों की तरह सदा शोभा को प्राप्त करने के लिए यत्नशील होते हैं। सदा सद्‌गुणों का आदान करने वाले वे प्राण साधक शत्रुओं पर आक्रमण करने वाले वीरों के समान खूब ही वृद्धि को प्राप्त होते हैं।

भावार्थः– प्राण साधना से प्राप्त होने वाली शोभा ही वास्तविक शोभा है।

प्र ये दिवः पृथिव्या न बर्हणा त्मना रिरिच्रे अभ्रान्न सूर्यः।
पाजस्वन्तो न वीराः पनस्यवो रिशादसो न मर्या अभिद्यवः।।

अर्थः– (**ये**) जो (**दिवः**) द्युलोक के दृष्टिकोण से और (**पृथिव्याः न**) पृथ्वी के दृष्टि कोण से (बर्हणा) वृद्धि के कारण (**त्मना**) स्वयं इस प्रकार (**प्ररिरिच्रे**) खूब बढ़े हुए होते हैं। जैसे कि (**अभ्रात् सूर्यः**) बादल से सूर्य बढ़ा हुआ होता है। (**पाजस्वन्तः**) शक्तिशाली (**वीराः न**) के समान ये प्राण साधक (**पनस्यवः**) स्तुति की कामना वाले होते हैं। इनका व्यवहार कायरों के समान नहीं होता है। (**रिशादसः**) शत्रुओं को खा जाने वाले (**मर्याः न**) मनुष्यों के समान ये (**अभिद्यवः**) अभिगत दीप्ति वाले होते हैं।

भावार्थः– प्राण साधना से मनुष्य ऊपर उठकर मस्तिष्क और शरीर को दृढ़ बना लेता है।

अगली ऋचा में कहा गया है कि प्राण साधना से शरीर रोगाक्रान्त नहीं होता है। उससे हमारा जीवन यज्ञमय हो जाता है।

प्र यद्वहध्वे मरूतः पराकाद्यूयं महः संवरणस्य वस्वः।
विदानासो वसवो राध्यस्याराच्चिद्द्वेषः सनुतर्युयोत।।

अर्थः– हे (**मरूतः**) प्राणो। (**यूयम्**) तुम (**यद्**) जब (**पराकाद्**) दूर देश से (**वहध्वे**) इन्द्रियों व मन को पुनः वापस लाते हो तो आप (**महः**) प्रशंसनीय (**संवरणस्य**) वरणीय, चाहने योग्य (**वस्वः**) आत्म धन को (**विदानास**) प्राप्त कराने वाले होते हो। उस आत्म धन को जो (**राध्यस्य**) सिद्ध करने योग्य है, सचमुच प्राप्त करने योग्य है। (**वसवः**) आत्मदर्शन के द्वारा उत्तम निवास को प्राप्त कराने वाले वसुओ। आप (**सनुतः**) अन्तर्हित (**द्वेषः**) की भावनाओं को (**आरात् चित्**) सुदूर ही (**युयोत**) हमसे पृथक करो।

भावार्थः– प्राणायाम से चित्त वृत्ति का निरोध होकर आत्मा दर्शन हो जाता है फिर मन में द्वेष भावनाओं का आभाव हो जाता है।

ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमा आदित्येन नाम्ना शंभविष्ठाः।
ते नोऽवन्तु रथतूर्मनीषां महश्च यामन्नध्वरे चकानाः।।

ऋ.10.77.8

अर्थः– प्राण साधना को अपनाने वाले लोग ही (**ते**) वे लोग (**हि**) निश्चय से (**यज्ञेषु यज्ञियासः**) यज्ञों में यज्ञशील होते हैं। (**ऊमा**) इन यज्ञों के द्वारा इस लोक और परलोक का रक्षण करने वाले बनते हैं। (**आदित्येन**) सब स्थानों से अच्छाई को ग्रहण करने की वृत्ति से तथा (नाम्ना) प्रभु के नाम स्मरण से अथवा नम्रमा से (**शंभविष्ठाः**) शान्ति को उत्पन्न करने वाले होते हैं। (**रथतूः**) शरीर रूप पथ को अपने जीवन के उदाहरण से हमारा मार्ग दर्शन करते हुए ये हमें कल्याण पथ का पथिक बनाते हैं। ये व्यक्ति (**अध्वरे**) यज्ञमय (**यामन्**) जीवन मार्ग में (**मनीषाम्**) बुद्धि को (**महः च**) और तेजस्विता को (**चकानाः**) चाहने वाले होते हैं।

भावार्थः– प्राण साधक पुरुष यज्ञमय जीवन जीकर बुद्धि और तेजस्विता को बढ़ाने वाले होते हैं।

विप्रासो न मन्मभिः स्वाध्यो देवा व्योऽ न यज्ञैः स्वप्नसः।
राजानो न चित्राः सुसंदृशः क्षितीनां न मर्या अरेपसः।।

ऋ.10.78.1

अर्थः– प्राण साधक पुरुष (**वि प्रासः न**) ज्ञानी पुरुषों के समान (**मन्मभिः**) विचार पूर्वक किए गए स्तवनों से (**स्वाध्यः**) शोभन ध्यान वाले होते हैं। यह ध्यान ही उन्हें (**वि–प्र**) अपना विशेष रूप से पूरण करने वाला बनता है। (**देवाव्यः न**) दिव्य गुणों को अपने में सुरक्षित करने वालों के समान ये साधक (**यज्ञैः**) यज्ञ के द्वारा (**स्वप्रसः**) सदा उत्तम कर्म वाले होते हैं। (**राजानः न**) राजाओं के समान, दीप्त जीवन वाले पुरुषों के समान ये (**चित्राः**) पूजनीय होते हैं और (**सुसन्दृश**) देखने में बड़े उत्तम लगते हैं। (**क्षितीनां न**) उत्तम निवास व गतिवालों के समान ये (**मर्याः**) मनुष्य (**अरेपसः**) निर्दोष जीवन वाले होते हैं।

भावार्थः– प्राण साधक पुरुष ज्ञानी पुरुषों के समान विचार पूर्वक किए गए स्तवनों से शोभन ध्यान वाले बनते हैं। दिव्य गुणों को अपने में सुरक्षित करने वालों के समान ये साधक यज्ञों के द्वारा सदा उत्तम कर्म वाले होते हैं। ये राजाओं के समान पूजनीय बनते हैं। देखने में सुन्दर आकृति वाले बनते हैं। ये सदैव निर्दोष जीवन जीने वाले बनते हैं।

अग्निर्न ये भ्राजसा रुक्मवक्षसो वातासो न स्वयुजः सद्यऊतयः।
प्रज्ञातारो न ज्येष्ठाः सुनीतयः सुशर्माणो न सोमा ऋतं यते ।।

अर्थः– (**ये**) जो प्राण साधक पुरुष हैं वे (**भ्राजसा**) दीप्ति की दृष्टि से (**अग्निःन**) अग्नि के समान हैं। (**रूक्मवक्षसः**) ये देदीप्यमान वक्षः स्थलों वाले होते हैं। (**बातसः न**) वायु के समान ये (**स्वयुजः**) स्वयं सदा कार्यों में निमग्न रहते हुए (**सद्य ऊतयः**) शीघ्र रक्षण वाले होते हैं। (**प्रज्ञातारः न**) प्रकृष्ट ज्ञानियों के समान (**ज्येष्ठाः**) ये प्रशस्त जीवन वाले होते हैं तथा (**सुनीतयः**) सदा उत्तम नीति मार्ग पर चलते हैं। ये प्राण (**ऋतं यते**) ऋत मार्ग पर चलने वाले के लिए (**सुशर्माणः न**) उत्तम सुख को देने वाले होते हैं, उसी प्रकार (**सोमाः**) उसको सौम्य व शान्त स्वभाव वाला बनाते हैं।

भावार्थ :– प्राण साधक लोग सौम्य और शान्त स्वभाव के बन जाते हैं।

वातासो न ये धुनयो जिगत्नवोऽग्नीनां न जिह्वा विरोकिणः।
वर्मण्वन्तो न योधाः शिमीवन्तः पितृणां न शंसाः सुरातयः ।।

अर्थः– प्राण साधक पुरुष वे हैं (**ये**) जो (**वातसः न**) वायु के समान शत्रुओं को कंपाने वाले तथा (**जिगत्नवः**) निरन्तर गतिशील होते हैं। (**अग्नीनां जिह्वाः न**) अग्नि की लपटों के समान (**विरोकिणः**) ये विशेष रूप से चमकाने वाले होते हैं। (**वर्मण्वन्तः योधाः न**) कवचधारी योद्धाओं के समान (**शिमीवन्तः**) ये शौर्य कर्मों वाले हो ते हैं। (**पितृणां शं साः न**) पितरों के उपदेशों की तरह (**सुरातवः**) उत्तम ज्ञान के दाता होते हैं।

उषसां न केतवोऽध्वरश्रियः शुभंयवो नाञ्जिभिर्व्यश्वितन्।
सिन्घवो न ययियो भ्राजदृष्टयः परावतो न योजनानि ममिरे ।।

अर्थः– (**उषसां केतवः न**) उषा काल की रश्मियों की तरह ये प्राण साधक भी ज्ञान की दीप्ति वाले होते हैं और (**अध्वरश्रियः**) यज्ञों का सेवन करने वाले होते हैं। (**शुभंयवः**) शुभ को अपने साथ मिलाने की कामना करने वालों के समान (**अञ्जिभिः**) उत्तम गुण रूपी आभूषणों से (**व्यश्वितन्**) ये दीप्त होते हैं। (**सिन्धवः न**) नदियों के समान (**ययियः**) निरन्तर गतिशील होने के कारण (**भ्राजद ऋष्टपः**) दीप्त रूप आयुधों (**इन्द्रिय मन और बुद्धि**) वाले होते हैं। (**परावतः न**) सुदूर मार्ग का आक्रमण करने वाले होते हैं (**योअनानि ममिरे**) कितने ही योजन चलते हुए थकते नहीं हैं।

भावार्थः– प्राण साधक लोग ज्ञान की दीप्ति से प्रकाशित रहते हैं, यज्ञ सेवी बनते हैं, शुभ को अपने साथ मिलाने वाले होते हैं, उत्तम गुण रूपी आभूषणों से दीप्त रहते हैं।

सुभागान्नो देवाः कृणुता सुरत्नास्मान्त्स्तोतृन्मरुतो वावृधानाः।
अधि स्तोत्रस्य सख्यस्य गात सनाद्धि वो रत्नधेयानि सन्ति ।।

अर्थः– हे (**देवाः**) प्राण साधना से उत्पन्न सब दिव्य गुणों। (**नः**) हमें (**सुभागान्**) उत्तम सेवनीय धनों वाला तथा (**सुरत्वान्**) उत्तम शरीरस्थ रस, रूधिर, मांस, अस्थि, मज्जा, मेदस् और वीर्य रूप सप्त रत्नों वाला कृणुता कीजिए। हे (**वावृधानाः**) वृद्धि को प्राप्त होते हुए (**मरूतः**) प्राणों। (**अस्मान् स्तोतृन कृणुता**) हमें आप स्तुति की वृत्ति वाला बनाइये। हे मरूतो। आप (**स्तोत्रस्य**) हमारे से किये जाते हुए स्तोत्रों को तथा (**सख्यस्य**) मित्रता को (**अधिगात**) प्राप्त होवो। हे प्राणो। (**वः**) आपके (**रत्नधेयानि**) हमारे शरीर में रत्नों की स्थापना रूप कार्य (**सनात् हि**) चिरकाल में निश्चय पूर्वक (**सन्ति**) हैं। इतिशम्।

शास्त्री नगर, दादाबाड़ी (कोटा)

महर्षि दयानन्द समाज सुधारक के रूप में

● डॉ. आर्येन्दु द्विवेदी

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने भारतीय समाज में उत्पन्न विसंगतियों के निवारण का जो प्रयास किया वह एक ओर मानवतावादी मूल्यों पर आधारित था तो दूसरी ओर वह परम्परागत भारतीय संस्कृति के मूल्यों पर भी आधारित था। आर्यसमाज द्वारा समाज सुधार कार्य को प्राथमिकता दी गयी तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का हर सम्भव प्रयास किया गया। स्वामी दयानन्द ने नई समाज की रचना की कल्पना की। उन्होंने नए मानस संगठन के लिए और नई सर्जना–क्षमता से सक्रिय होने के लिए भारतीय व्यक्तित्व को वैदिक संस्कृति के आधार पर प्रतिष्ठित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने वेदों के प्रमाण्य का आधार विवेक संगत ही ग्रहण किया है। वेदों में समस्त ज्ञान की अभिव्यक्ति है। वह सहज ही सबके लिए समान रुप से ग्राह्य है। स्वामी दयानन्द ने वैदिक संस्कृति के माध्यम से जिन मानवीय मूल्यों की स्थापना की है वे भारतीय समाज की आधुनिक प्रगति तथा रचना की दृष्टि से उपयोगी एवं अनुकूल प्रतीत होती है।

उन्नीसवीं शताब्दी में बाल विवाह का प्रचलन अत्यन्त व्यापक हो गया था। अल्पायु में लड़के–लड़कियों का विवाह कर दिया जाता था। कम आयु में लड़कों का निधन होने से समाज में विधवाओं की संख्या में वृद्धि हो रही थी। विधवाओं को समाज में हीन दृष्टि से देखा जाता था। स्वामी दयानन्द नारी के सामाजिक अधिकारों के प्रति सर्वथा सचेत थे। उन्होंने बाल विवाह, वृद्ध विवाह, बेमेल विवाह आदि से होने वाले सामाजिक अत्याचारों को मिटाने के लिए अथक प्रयत्न किया और स्त्रियों को पूर्ण सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, नैतिक स्वतंत्रता का अधिकारिणी बनाया।

स्वामी दयानन्द का मत है कि 'बाल्यावस्था में विवाह का परिणाम है कि ब्रह्मचर्य के अभाव में युवक एवं युवतियों के शारीरिक व मानसिक शाक्तियों का समुचित विकास नहीं हो पाता है और जिससे इस देश की उन्नति में बाधा पहुँचती है।' स्वामी जी के विचार में चौबीस वर्ष के बाद विवाह होने से पुरुष का वीर्य परिपक्व, शरीर बलिष्ठ होता है तथा 16 वर्ष के पश्चात् स्त्री का गर्भाशय और शरीर बलयुक्त हो जाता है जिससे उत्तम संतान प्राप्त होती है। स्वामी जी के विचार में विवाह की उत्तम आयु लड़कियों के लिए 16 और 24 वर्ष और पुरुषों के लिए 25 से 48 वर्ष होनी चाहिए। स्वामी जी ने इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए, राजशक्ति के प्रयोग की परामर्श दी थी। शारदा अधिनियम एवं भारत सरकार द्वारा कानूनी दृष्टि से 18 वर्ष की लड़की एवं 21 वर्ष की आयु के लड़के को मान्यता दिए जाने से भारतीय समाज में बाल विवाह के प्रचलन में निरन्तर कमी हो रही है। वर्तमान समय में भी आर्यसमाज द्वारा बालविवाह की कुरीति को समाप्त करने हेतु प्रयास किए जा रहे हैं।

स्वामी दयानन्द के प्रादुर्भाव के समय विवाह पद्धति में अनेक दोष–अन्धविश्वास, आडम्बर समाज में प्रचलित थे। स्वामी दयानन्द ने जनमानस का ध्यान विवाह पद्धतियों में दोषों की ओर आकृष्ट किया और इन दोनों को समाप्त करने का प्रयास किया। स्वामी जी ने दहेज तथा अन्य अपव्यय की निन्दा करते हुए ब्राह्म विधि से विवाह को सर्वश्रेष्ठ बताया है।

विवाह सम्बन्ध का निर्धारण नाइयों द्वारा किया जाता था। वर वधू की जन्मपत्रियों को मिलाकर के विवाह सम्बन्ध तय किए जाते थे। आर्यसमाज ने इन दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया। विवाह सम्बन्ध निर्धारण के लिए गुण, कर्म, स्वभाव की समानता को प्रदान किया। स्वामी दयानन्द का मन्तव्य था कि स्त्री–पुरुषों का विवाह हो। उन्हें विद्या, कुल, रूप, शरीर, धन, गुण, कर्म, स्वभाव आदि के तुल्य होना चाहिए और विवाह सम्बन्ध का निर्धारण माता–पिता के स्थान पर युवक युवती को स्वेच्छापूर्वक करना चाहिए। उन्होंने न केवल स्वयंवर विवाह का समर्थन किया अपितु अन्तर्जातीय, अन्तर्देशीय, अन्तर्धार्मिक विवाहों की अनुमति प्रदान की है। महर्षि के क्रान्तिकारी विचारों ने नारी जागरण की दिशा में अद्भुत कार्य किया। इससे स्त्री जाति को नवजीवन और नई दिशा मिली।

महर्षि पुरुष के साथ नारी की समानता का पूर्ण समर्थन करते हैं। स्वामी जी ने आपद्धर्म के रूप में गृहस्थ की पवित्रता की दृष्टि से विधवाओं के पुनर्विवाह को उचित माना है। आपके अनुसार जब पुरुषों को द्वितीय विवाह की आज्ञा दी जाती है तो स्त्रियों को भी द्वितीय विवाह से नहीं रोकना चाहिए। विधवाओं को स्वावलम्बी बनाने के उद्देश्य से आर्यसमाज ने अनेक विधवाश्रमों की स्थापना की है, जिसमें विधवा स्त्री के भरण–पोषण के साथ–साथ उन्हें विभिन्न लघु उद्योग, सिलाई–कढ़ाई आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। स्वामी मंगलदेव की प्रेरणा से सन् 1909 में आगरा में 'विधवा हितकारिष सभा' की स्थापना हुई थी। सन् 1911 में आगरा विधवाश्रम स्थापित हुआ जिसमें प्रारम्भ में 3 विधवाएँ थीं। बाद में निरन्तर वृद्धि होती गयी और प्रतिवर्ष 100 विधवाएँ आश्रम में प्रविष्ट होने लगीं।

महर्षि दयानन्द ने पर्दाप्रथा के समान सतीप्रथा तथा वेश्यावृत्ति का विरोध किया है। वेश्यावृत्ति के साथ–साथ तीर्थ स्थानों पर स्वयं माता–पिता द्वारा कर्मकाण्डी हिन्दू कन्यादान करने की जो कुप्रथा प्रचलित थी, उसे स्वामी जी ने अत्यन्त घृणित और त्याज्य कर्म बताया है। आर्यसमाज द्वारा पर्वतीय नायक कन्याओं जो वेश्यावृति में सलंग्न थीं। उनका उद्धार किया तथा मेरठ में 'नायक बालिका आश्रम' खोला गया, जिससे यह प्रथा समाप्त हो सकी।

उन्नीसवीं शताब्दी में पौराणिक ग्रन्थों के आधार पर समाज में स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं दिया गया था। वेदों को स्वामी दयानन्द ने अपौरूषेय माना है और वेदों को ज्ञान, सत्य की अनुभूति का एकमात्र आधार घोषित किया है। स्वामी दयानन्द के अनुसार प्रत्येक हिन्दू चाहे वह निम्न जाति का हो या उच्च जाति का, स्त्री हो या पुरुष वेदाध्ययन करना चाहिए। स्वामी जी के अनुसार वेद ही ऐसा ग्रन्थ है जिसकी छत्र–छाया में संसार के सभी मानव सुख, शान्ति पा सकते हैं। नारी को स्वामी दयानन्द ने पुरुषों के समकक्ष माना है और वेदादि का दोनों को समान ज्ञान प्राप्त करने का अधिकारी माना है। ज्ञानस्वरूप वेद का ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार प्रत्येक मानव को है। स्वामी दयानन्द ने वैदिक सिद्धान्तों के विरुद्ध हिन्दू स्त्रियों पर अमानवीय बन्धन दूर करने के प्रयास किए।

आर्यसमाज के प्रादुर्भाव के समय भारतीय समाज में निम्न जातियों के सदस्य अछूत माने जाते थे। इनके विरुद्ध असह्य और अकथनीय अत्याचार होते थे। दक्षिण में अस्पृश्यता की प्रथा भयावह थी। स्वामी दयानन्द ने निम्न वर्ण के साथ हो रहे अत्याचारों की निन्दा की। स्वामी जी जन्म के आधार पर किसी को अछूत नहीं मानते थे। उन्होंने गुरुकुलों में निःशुल्क शिक्षा, खान–पान में समानता का व्यवहार प्रदान किया। आर्यसमाज द्वारा अछूतोहार आन्दोलन किए गए। स्वामी दयानन्द ने समस्त धार्मिक कार्यों में शूद्रों को भाग लेने में स्वतन्त्रता प्रदान की तथा इन पर किसी भी प्रकार का प्रतिबन्ध न लगाने की सलाह दी। आर्यसमाज द्वारा धर्म परिवर्तन किए गए व्यक्ति को पुनः स्वधर्म में शामिल किया गया। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवनकाल में अछूतों तथा दलितों का उद्धार करने तथा समाज में उचित स्थान दिलाने का जो प्रयत्न किया था वह उसके पश्चात् आर्यसमाज द्वारा जारी रखा गया।

आर्यसमाज द्वारा अनाथों, असहायों की सहायता एवं सुरक्षा के लिए अनाथालयों की स्थापना की गई। अनाथों, बेसहारा, अबलाओं के संरक्षण के लिए आर्यसमाज द्वारा महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी कार्य किए जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में सन् 1866 में फिरोजपुर पंजाब में हिन्दू अनाथालय स्थापित किया था। इस संस्था द्वारा और अन्य आर्यसमाज द्वारा संचालित अनाथालयों के माध्यम से सहस्त्रों अनाथों का पालन हुआ तथा उन्हें सुशिक्षित एवं स्वावलम्बी बनाया जा रहा है।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज में अनेक जातियाँ एवं उपजातियाँ उत्पन्न हो गयी थीं। तत्कालीन समाज में जाति व्यवस्था विकृत थी और यह व्यवस्था सामाजिक राष्ट्रीय संस्था बनकर समाज को विघटन की ओर अग्रसर कर रही है। स्वामी दयानन्द ने भारतीय समाज में प्रचलित कट्टर जाति प्रथा का खण्डन किया एवं इसे दूर करने का प्रयास किया। स्वामी दयानन्द ने जात–पांत, छुआ–छूत, ऊँच–नीच के विरुद्ध उपदेश दिया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र का आधार, जन्म के स्थान पर कर्म माना। स्वामी जी के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र किसी भी वर्ण का व्यक्ति सदस्य बन सकता है और वैदिक धर्म की मान्यताओं का अनुसरण करके समाज को संगठित कर सकता है।

महर्षि दयानन्द ने धर्म के निरर्थक कर्मकाण्डों के नाम पर चलाई गयी कुरीतियों, अन्धविश्वासों, जड़ पूजाओं, मान्यताओं का घोर विरोध किया। महर्षि के अनुसार शूद्रों सहित समस्त मानवमात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है। महर्षि ने भूतप्रेत, राक्षस, पिशाच का खण्डन किया है। जब कोई मर जाता है तो उसे प्रेत कहते हैं। दाह संस्कार हो जाने के बाद भूत अर्थात् बीता हुआ हो जाता है।

स्वामी जी के विचार में भूत, प्रेत आदि स्वयं अपने आप में बैठा डर है इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। समाज में व्याप्त इस अन्धविश्वास को उन्होंने दूर करने का प्रयास किया।

हिन्दू समाज में पुत्र प्राप्त हेतु अनेक अन्धविश्वास तथा व्रत, ग्रह, नक्षत्र, जन्मपत्र, मुहूर्त को महत्त्व नहीं दिया है। जादू, टोना आदि अन्धविश्वास पर स्वामी जी विश्वास नहीं करते थे।

स्वामी दयानन्द ने सामाजिक क्षेत्र के सुधार के महत्त्वपूर्ण विकास किए। स्वामी जी ने अंधविश्वास, पाखण्ड, पौराणिकवाद धर्म की आड़ में हो रहे अत्याचारों, स्त्रियों की निम्न स्थिति, दहेज प्रथा, बालविवाह, विधवा पुनर्विवाह निषेध, देवदासी प्रथा, पर्दाप्रथा आदि कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उन्होंने अपने विचारों से समाज में जागृति उत्पन्न की और समाज को नई दिशा दी। स्वामी जी के अन्धविश्वास एवं पाखण्ड के खण्डन एवं हिन्दू समाज को संगठित करने का प्रयास समाज में परिवर्तन और आधुनिकीकरण का सूचक है।

एसोसिएट प्रोफेसर समाजशास्त्र
राजकीय विद्यालय कैम्पियरगंज (गोरखपुर)
मो. 9415592187

सामाजिक उत्थान व आर्यसमाज

● रीना जायसवाल

उन्नीसवीं शताब्दी में भारत का अंग्रेजों द्वारा धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक शोषण अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था। भारतीय समाज दोहरे संकट से गुजर रहा था। एक उसकी स्वयं की दयनीय दशा और दूसरा इस्लाम तथा ईसाइयत का तेजी से बढ़ता हुआ सर्वग्रासी रूप। धर्म का वास्तविक स्वरूप लुप्त हो चुका था। पाखण्ड, आडम्बर, अंधविश्वास आदि ने धर्म को आच्छादित कर लिया था। धर्म के नाम पर पापाचार पनप चुके थे। जात–पात, छुआछूत, बाल–विवाह, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियाँ समाज को जर्जर कर रही थीं। सती–प्रथा तथा बहुविवाह, दहेज जैसी क्रूरताएँ समाज में विद्यमान थीं। समाज में नैतिक अंध:पतन हो जाने के कारण स्त्रियों की दशा अत्यन्त दयनीय थी।

राजनीतिक स्वतंत्रता के अभाव में तत्कालीन आर्थिक स्थित जर्जर हो गई थी। अंग्रेजों की शोषण नीति के फलस्वरूप भारतीय कृषि व्यवस्था और कुटीर उद्योग–धंधे नष्ट हो गए थे। आर्थिक कठिनाइयाँ ग्रस्त निम्न वर्ग को ईसाई बनाया जा रहा था।

ऐसे समय में पुनर्जागरण की लहर समाज में आयी। पुनर्जागरण का अर्थ है कुछ समय निद्रा के उपरान्त राष्ट्र के मानस एवं आत्मा का जागृत होना। धार्मिक और सुधारवादी आन्दोलनों में ब्रह्मसमाज, आर्यसमाज, रामकृष्ण मिशन, प्रार्थना समाज एवं थियोसोफिकल सोसाइटी प्रमुख हैं। राजा राममोहन राय ने पर्दाप्रथा, बहु विवाह, स्त्रियों में अशिक्षा, सती प्रथा आदि कुरीतियों के निराकरण का प्रयास किया। प्रार्थना समाज ने अवतारवाद, बहुदेवतावाद, मूर्तिपूजा, पुजारियों की सत्ता के विरोध के साथ–साथ धार्मिक एवं सामाजिक सुधार का प्रयत्न किया जिससे हिन्दू समाज जागृत हो सके।

रामकृष्ण परमहंस ने सभी धर्मों को समान बताकर धार्मिक समन्वयवाद पर बल दिया। इसके पश्चात् थियोसोफिकल सोसाइटी ने भारतीय संस्कृति के गौरव ग्रन्थों, वेदों, उपनिषदों के अध्ययन एवं धर्माचरण की प्रेरणा दी।

धार्मिक नवजागरण का सबसे प्रभावशाली योगदान आर्यसमाज द्वारा संचालित किया गया। आर्यसमाज ने निराकार ब्रह्म की उपासना एवं भारतीय संस्कृति पर आधारित शिक्षा व्यवस्था सुलभ कराने पर बल दिया। धार्मिक पुनर्जागरण में आर्यसमाज आन्दोलन ने महत्त्वपूर्ण कार्य संपादित किए। स्वामी दयानन्द सरस्वती उस सुधार और पुनर्गठन के समर्थक थे जो विभिन्न धर्मों के समन्वय पर आधारित न होकर शुद्ध हिन्दू परम्पराओं की मान्यताओं पर आधारित थी। स्वामी दयानन्द का उद्देश्य धर्म निरपेक्षता अथवा ईसाई, इस्लामी धर्मों की मान्यताओं में एकता की खोज न करके वैदिक धर्म का पुनरून्नयन करना है। स्वामीजी का विचार था कि हिन्दू धर्म में नवजीवन तभी आ सकता है जब समाज में व्याप्त रूढियों, अंधविश्वासों तथा निर्मूल परम्पराओं को समाप्त करके वैदिक धर्म की स्थापना की जाए।

महर्षि दयानन्द ने हिन्दू समाज को संगठित करने का प्रयास किया।महर्षि दयान्द के प्रेरणास्रोत वेद एवं अन्य प्राचीन ग्रंथ थे। उन्होंने वेदों को समस्त ज्ञान का भण्डार सिद्ध किया और वैदिक ज्ञान के आलोक में भारतीय जनमानस में व्याप्त अज्ञानजनित अंधकार को दूर करने का सार्थक प्रयास किया। स्वामी दयानन्द मुख्यतः धार्मिक सुधारक थे। उन्होंने स्त्री और शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकारी बनाया और निम्न वर्ग पर हो रहे अत्याचारों की निंदा की। अपने वाणी, लेखन, व्याख्यान, शास्त्रार्थ द्वारा हिन्दू समाज को जागृत करने का प्रयास किया।

आर्यसमाज आन्दोलन ने व्यापक आन्दोलन का रूप लिया और समाज को नवीन प्रकाश प्रदान किया। महर्षि दयानन्द के अनुसार धर्म का अभिप्राय कर्मकाण्ड के जटिल क्रिया जाल का पालन ही नहीं अपितु धर्म उन उदान्त गुणों की समष्टि का नाम है जो मनुष्य के नैतिक संवर्धन तथा आध्यात्मिक उत्थान में सहायक होते हैं। स्वामी दयानन्द ने वेद को धर्म का मूलाधार बताया है। अपने ग्रन्थों द्वारा पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को दूर करने का प्रयास किया।

आर्यसमाज के प्रचार–प्रचार में अनेक वितराग तपस्वी, सन्यासियों, विद्वानों और उत्साही प्रचारों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। आज आर्यसमाज की अनेक शाखाएँ वैदिक संस्कृति का प्रचार कर रही हैं।

सामाजिक क्षेत्र में स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज आन्दोलन का अत्यधिक महत्त्वपूर्ण योगदान है। तत्कालीन समाज में अल्पायु में बालक व बालिकाओं का विवाह कर दिया जाता था। महर्षि दयानन्द ने ब्रह्मचर्य पर बल दिया। विवाह की आयु न्यूनतम 24 वर्ष पुरुष एवं 16 वर्ष कन्या निर्धारित की। स्वस्थ लोगों में विवाह से उत्तम संतान प्राप्त होती है। महर्षि ने वर एवं कन्या के गुणों का विधान बताया है।

आर्य समाज ने विधवाओं के लिए विधवाश्रम, अनाथों के लिए अनाथालय की स्थापना की। तत्कालीन समाज में व्याप्त भूत–प्रेत की पूजा, जादू–टोने में विश्वास, संतान प्राप्ति के लिए विविध कर्म तन्त्र, मंत्र आदि अंधविश्वासों को महर्षि ने दूर करने का प्रयास किया। महर्षि ने जाति प्रथा का विरोध करते हुए गुण, कर्म के आधार पर जाति प्रथा का निर्धारण किया। दलितों के उद्धार के लिए दलितोद्धार सभा, अछूतोद्धार सभा, दलितोद्धार संगठन आदि स्थापित किए गए जिससे निम्न जातियों का उत्थान हो सके।

महर्षि दयानन्द ने वेदों के प्रमाण द्वारा सभी को वेदाध्ययन का अधिकार दिया है। नर–नारी, शूद्र सहित सभी को वेद पढ़ने का अधिकार प्राप्त है। आर्य समाज के सुधार आन्दोलनों का भारतीय समाज और संस्कृति पर बहुमुखी प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज के प्रादुर्भाव के समय भारत धर्मिक और नैतिक दृष्टि से पतन की ओर अग्रसर था। समाज में बहुदेवतावाद, अवतारवाद, मूर्तिपूजा के प्रचलन के साथ–साथ धर्मों के नाम पर अनेक कुकर्म हो रहे थे। महर्षि ने निराकार, अजन्मा, परमात्मा की पूजा, अराधना, उपासना तथा संध्या हवन करने की सलाह दी।

भारतवर्ष में राष्ट्रीय शिक्षा के अग्रदूतों में महर्षि दयानन्द, महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, मदन मोहन मालवीय और अरविन्द घोष प्रमुख हैं। भारतवर्ष में राष्ट्रीय शिक्षा के प्रवर्तक और उन्नायक महर्षि दयानन्द हैं। उन्होंने प्रचीन संस्कृति पर बल देते हुए गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति की आधारशिला रखी। उन्होंने आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, समाजवादी दर्शन को समाचित करते हुए सत्य, सदाचार एवं ब्रह्मचर्य पर बल दिया। शिक्षा वैयक्तिक एवं सामाजिक उन्नति के लिए है।

भारतवर्ष में स्त्री शिक्षा के उन्नायक महर्षि दयानन्द को माना जा सकता है। उन्होंने जाति भेद मूलक, शिक्षा व्यवस्था का विरोध किया और स्त्रियों तथा शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार प्रदान किया। संस्कृत भाषा के ज्ञान के बिना शिक्षा अपूर्ण है। स्वामीजी का विचार है कि स्वावलम्बन की भावना शिक्षा के मूल में होनी चाहिए। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित होने पर बल दिया। वर्तमान समय में गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, डी.ए.वी. कॉलेज, बाल विद्या मंदिर, मॉडल स्कूल, पब्लिक स्कूल आदि में परम्परागत भारतीय संस्कृति और नवीन पाश्चात्य ज्ञान के समन्वय के आधार पर इस समय शिक्षा दी जा रही है। पाँच हजार से भी अधिक शिक्षण संस्थाएँ देश–विदेशों में आर्य समाज द्वारा संचालित की जा रही हैं।

महर्षि ने राजनीतिक और आर्थिक सुधारों पर बल दिया। स्वराज्य का मर्म सर्वप्रथम महर्षि द्वारा उद्घोषित किया। महर्षि दयानन्द में भारत को राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक रूप में एकसूत्र में बाँधने का प्रयास किया। उन्होंने स्वदेश, स्वधर्म, स्वजाति, स्वसंस्कृति और स्वभाषा का प्रबल समर्थन करके भारतवासियों में राष्ट्रीय भावना का संचार किया।

आर्य समाज ने आर्थिक सुधारों पर भी ध्यान दिया। स्वामीजी का मत है कि करों का उदे्श्य प्रजा का सुख है। महर्षि ने बीस प्रतिशत आय शिक्षा, बीस प्रतिशत धन स्थिर कोष, बीस प्रतिशत राज्य, तीस प्रतिशत रक्षा व्यवस्था के लिए निर्धारित किया है। महर्षि द्वारा प्रतिपादित अर्थव्यवस्था आज भी प्रासंगिक है।

आर्य समाज ने सामाजिक, धार्मिक, नैतिक सुधार, जातिवादी परम्पराओं में सुधार, शिक्षा के क्षेत्र में सुधार तथा राजनीतिक, आर्थिक सुधारों द्वारा हिन्दुओं की क्षीण शक्ति को पुनर्जीवित किया और समाज को नई दिशा प्रदान की। महर्षि दयानन्द का स्पष्ट मत है कि मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी प्रकार की दासता से मुक्ति प्राप्त होनी चाहिए। अपनी स्थापना काल से आजतक आर्य समाज विविध सुधार कार्यों में सफलतापूर्वक अग्रसर होता रहा है। इसके प्रगतिशील विचार और मानवतावादी संदेश समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं। महर्षि दयानन्द भारत के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक सुधार के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

वरदा आर्ट इन्स्टीच्यूट
बी–54 सूरजकुण्ड कालोनी, गोरखपुर
मो. 9839058288

बुढ़ापे को जीवंत बनाएँ?

● कृष्ण मोहन गोयल

तकरीबन दो दशक से अधिक समय बीत चुका है, जब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने एक नया नारा दिया था– 'बुढ़ापे को जीवंत बनाएँ।' विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तब पहली बार अनिवार्य एवं उपेक्षित वृद्ध जीवन की गम्भीर समस्याओं की ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित किया था। वृद्धजनों के हित में दिये गये इस मानव हितकारी नारे के चलते विश्व में वृद्धों को भौतिक–मानसिक स्थितियों में विशेष परिवर्तन तो नहीं आया है लेकिन इतना ज़रूर हुआ है कि विश्व के तमाम देशों में जीवंत चेतना की एक नई लहर दिखाई दी। वैसे, वृद्धजनों का आदर प्रायः हर देश में किया जाता है कम से कम यह बात सिद्धान्त रूप से सभी स्वीकार करते हैं कि वृद्धजनों का आदर किया जाना चाहिए।

अमरीका में वृद्धजनों को आदर के साथ 'सीनियर सिटीजन' कहाँ जाता है। पूर्व सोवियत संघ में भी बुजुर्गों का पर्याप्त आदर करने की परम्परा थी। वृद्धजनों को वहां अनेक तरह से संवैधानिक अधिकार प्राप्त थे। बुजुर्गों और अशक्त जनों के लिए सस्ते दर पर पौष्टिक आहार, मुफ्त चिकित्सा व्यवस्था, बाज़ार में सस्ती दवाएँ, रहने योग्य व्यवस्थित आवास, पर्यटन स्थलों पर बेहतर आरामगाह, जीवनयापन के लिए तमाम तरह की आर्थिक सहायता, ज़रूरत के अनुसार विशेष तरह के राजकीय संरक्षण और विभिन्न रियायतें आदि की सुविधाएँ वहाँ की संवैधानिक सीमाओं में दीर्घकाल से सुरक्षित हैं।

मातृ–पितृ देव

ऋषि–मुनियों के देश भारत में वृद्धजनों का आदर–सम्मान करने की सुदीर्घ परम्परा आदिकाल से चली आ रही है। माता–पिता को देवतुल्य सम्मान देने की भावना भारतीय चिन्तकों की मौलिक सूझ का परिचायक रहा है। शायद, यही वजह है कि हमारे यहाँ संयुक्त परिवारों के बुरी तरह टूटने के बावजूद वृद्धाश्रमों का आदर करना, उनके बतलाये रास्ते पर चलना, ज़रूरत पड़ने पर उनका सक्रिय सहयोग लेना और उनके अनुभव से फायदा उठाना हम नहीं भूलते। कड़वा पक्ष यह भी है कि हम अपने वृद्धजनों के प्रति दिनोंदिन उदासीन होते जा रहे हैं। कई बार तो हम उन्हें मन से सम्मान न देकर सम्मान देने की रस्मी–अदायगी भर करते हैं। अक्सर संयुक्त परिवारों के टूटने पर बाबा, दादी, माता–पिता तक का बँटवारा कर दिया जाता है। ऐसे में उपेक्षित विधुर और विधवाओं की स्थिति कहीं ज्यादा दयनीय बन जाती है। वृद्धजनों की परवरिश और उनकी छोटी–छोटी ज़रूरतों को लेकर अक्सर कलह हो जाती है। परिवार के अन्दर जब तक शरीर चलता है, वे भार नहीं होते। जिन्दगी से थकते, बीमार पड़ते या धनाभाव में उन्हें भार समझ लिया जाता है।

मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास, अहमदाबाद या लखनऊ के सरकारी और गैर–सरकारी वृद्ध सदनों (हाऊस फार ओल्ड पीपुल्स) को अंगुलियों पर गिना जा सकता है। लेकिन वहाँ भी वास्तविक ज़रूरतमंद नहीं पहुँच पाते। गैर सरकारी वृद्ध सदनों में पारसियों, ईसाइयों या सिन्धियों के वृद्धसदन भी देखने में आते हैं। जहाँ वृद्धजनों को मुफ्त भोजन, आवास या कपड़े – जैसी सुविधाएँ दी जाती हैं। मिशनरियों के वृद्ध सदन कहीं साफ–सुथरे और सुविधाओं से सम्पन्न हैं। कतिपय समृद्ध सामाजिक संस्थाएँ भी अपने होम (सदन) चला रही हैं। लेकिन वे वृद्धसदन शहरी लोगों तक ही सीमित हैं। देश के पाँच लाख गाँवों में असहाय, अशक्त वृद्धजनों को बसाने का ख्याल अभी सपना है। सच तो यह है कि हमारी व्यवस्था और समाज ने वृद्धजनों की समस्याओं को कभी मानवीय समस्या के रूप में नहीं स्वीकारा है। यही वजह है कि अपने देश में वृद्धजनों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के आँकड़े उपलब्ध नहीं है।

श्रम का महत्त्व

बुढ़ापे को जीवंत और उपयोगी बनाने के लिए श्रम का महत्त्व स्वीकारना ही होगा। पाश्चात्य देशों में तमाम सरकारी सुविधाओं के बावजूद लोग ज्यादा से ज्यादा सक्रिय रहने की कोशिश करते है। उन्हें दीर्घ जीवन के लिए श्रम की अहमियत का अहसास है।

पूर्व सोवियत संघ के संविधान में नागरिकों को वृद्धावस्था में उचित रख रखाव की गारन्टी रही है। लेकिन वहाँ वृद्धजन राजकीय सेवा से मुक्त होने के बाद भी औद्योगिक संस्थानों, खेतों या पशुपालन फार्मों में काम जारी रखते हैं। वृद्ध सदन में रहने वाले पार्ट टाइम काम भी करते हैं। क्योंकि वृद्धजनों में अकेलेपन और उदासीनता की भावना पनपने लगती है और यह भावना आयु को प्रभावित करती है।

चीन में वृद्धजनों को कम्यून (विशेष तरह के सामूहिक–आवास) में रखा जाता है। उन्हें पांच तरह की मौलिक गारन्टी दी जाती है। पर्याप्त भोजन, वस्त्र, ईंधन, मृत्यु के बाद सम्मानप्रद अन्तिम संस्कार और बच्चों को शिक्षा। उन्हें कम मेहनत वाले काम दिये जाते हैं। वृद्ध औरतें सामूहिक भोजन–कक्ष, रसोई का निरीक्षण या छोटे बच्चों की देखभाल करती हैं।

अमरीका, पश्चिम जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, कनाडा आदि देशों की सरकारें वृद्धजनों की समस्याओं की ओर जागरूक हैं। अमरीकी वृद्धों को आज 'सीनियर सीटिजन' कहा जाता है लेकिन यह सम्मान प्राप्त करने के लिए अमरीकी वृद्धजनों ने सक्रिय संघर्ष किये हैं। 'ग्रे पैंथर' – जैसी मजबूत संस्थाओं ने उनके साथ सहयोग कर लड़ाइयाँ लड़ी हैं। ग्रे पैंथर का नारा हैः 'जीने के लिए लड़ना सीखो।'

अमरीकी सुश्रुषागृहों (सरकारी आवासों) में रहने वाले वृद्धजन भावनात्मक स्तर पर कहीं ज्यादा विपन्न हैं। घरों में भी अच्छी स्थिति नहीं है। लारी मोर्स का कहना है कि हमारे बुजुर्ग अपने घरों में अकेलेपन और खामोशी का जाम पीकर जीते हैं। मोर्स अपनी रिपार्ट में लिखते हैं– 'अमरीकी सुश्रुषागृहों में ये अमरीकी वृद्धजन हफ्तों अपनों का इन्तजार करते हैं, अपने स्वजन बन्धुओं को याद करते हैं, अतीत की तमाम कहानियाँ सुनाते नज़र आते हैं, पर कोई उनसे मिलने, उनका हाल पूछने नहीं आता। इन वृद्धों से मिलने व उनके लिए उपहार लेकर आने वालों की संख्या बहुत कम है। उन्हें सरकारी सुख–सुविधाएं देने के बाद भी अकेलापन और उनकी निजी उदासीनता खतम नहीं होती।

कुछ वर्ष पहले न्यूयार्क में ग्रे पैंथर के नेतृत्व में अमरीकी वृद्धजनों ने एक विशाल प्रदर्शन करके अपनी समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित कराया था। ग्रे पैंथर ने सरकार के सामने जो सुझाव रखे थे, उनमें वृद्धजनों के लिए परिवहन में रियायत, सिनेमाघरों, थियेटरों की टिकट दरों में आधी छूट, किराने की दुकानों में खरीद–फरोख्त पर छूट, दवा की कीमत कम करने– जैसी कई सुविधाएँ हैं। अपने अकेलेपन के बावजूद अमरीकी वृद्ध अपनी एकता और अधिकार को समझते हैं। यही वजह है कि अब वहाँ बूढ़ों की देखभाल का अहसास गहराता जा रहा है।

विश्व की अधिकांश जेलों में भी वृद्धों की संख्या कम नहीं है। वहाँ भी इन वृद्धों के साथ किसी प्रकार कोई रियायत नहीं बरती जाती है। अन्य अपराधियों के समाज ही व्यवहार किया जाता है। क्यों?

यह भी एक खेद का विषय है कि वृद्धों की बैंकों में जो राशि जमा है उस पर ब्याज दर दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। जिससे शाश्वत वृद्धों के सामने अपनी आजीविका का घोर संकट उत्पन्न होता चला जा रहा है। इसी प्रकार बीमा क्षेत्र भी वृद्धों को किसी भी प्रकार का संरक्षण नहीं दे पा रहा है। इसके साथ ही साथ विश्व स्वास्थ्य संगठन के आह्वान के उपरान्त भी अधिकांश देशों में सरकारें वृद्ध महिला–पुरुषों को किसी प्रकार का उचित संरक्षण देने को तत्पर नहीं है।

भारत– जैसे विशाल देश में कई तरह की समस्याएँ हैं। पश्चिमी देशों में हम जिनकी तुलना नहीं कर सकते। शारीरिक दुर्बलता, क्षीण याददाश्त, अनिद्रा, स्वजनों की ओर से निरन्तर उपेक्षा, आपसी सौहार्द में गिरावट, छोटी–छोटी बातों पर पारिवारिक कलह, निराशाएँ, अकेलापन–जैसी समस्याएँ, वृद्धावस्था को बोझिल बना देती हैं। अशक्तजनों की स्थिति ज्यादा चिन्ताजनक है। ऐसे में मृत्यु भय उपजने लगता और बुढ़ापा असहाय हो जाता है।

वृद्धजन समाज के लिए अनुपयोगी नहीं है। वे देश की अनुभवसिद्ध शक्ति है। अपने बुजुर्ग नागरिकों को मामूली पेंशन देकर कर्तव्य की इतिश्री कर लेने वाली सरकार प्रगतिशील कहलाने का हक नहीं रखतीं। काश! वह इस ओर गम्भीरता से सोच पाती।

वृद्धनां समादरितं चैव उपसेवितं
चत्वारि वर्द्धते विद्या, आयुः,
यशो, बलम्।

वृद्धों का आदर एवं उनकी सेवा से मानव को दीर्घायु, विद्या, यश और बल की प्राप्ति होती है।

113–बाजार कोट
अमरोहा–244221
मो. 9927064104

अदिती के सम्पर्क से आनन्दित हों

● डॉ. अशोक आर्य

मानव जीवन में जो कुछ भी आनन्द या खुशी है, उस सुख पर आधार अदिती ही है। मानव सदा सुख चाहता है, खुशी व प्रसन्नता चाहता है। इसलिए इसे निरन्तर अदिती के संपर्क में रहना आवश्यक है। यह वह तथ्य है, जिस पर यजुर्वेद के 14वाँ मन्त्र इस प्रकार प्रकाश डाल रहा है :–

शर्मास्य वधूतं॑रक्शोऽवधूताऽअरातयो
ऽदित्यास्त्वगसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु।
अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावाऽसि प्रथुबुध्नः प्रति
त्वादित्यास्त्वग्वत्तु।। यजु. 1.14।।

Please see tha manter in Aarti font also to clear vesion

शर्मास्य वधूत॑रक्षोऽवधूता
ऽअरातयोऽदित्यास्त्वगसि प्रति त्वादित्र्विसु।
अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावासि पृथुबुध्नः प्रति
त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु।। यजुर्वेद 1.14।।

इस मन्त्र में छः बिन्दुओं पर विचार करते हुए प्रभु ने उपदेश किया है:–

1. मानव जीवन आनन्द से भरपूर :–

जब हमने अपने अन्दर व बाहर के सब कलुष, सब बुराईयाँ, सब गन्दगी धो कर शुद्ध व पवित्र हो जाते हैं तो हम प्रभु की निकटता पाने के अधिकारी हो जाते हैं। जिस प्राणी को प्रभु के निकट आसन लगाने का अधिकार मिल जाता है, उस प्राणी का जीवन आनन्द से भर जाता है। अब सब ओर उसे आनन्द ही आनन्द, सुख ही सुख, खुशी ही खुशी मिलती है। वह प्रतिक्षण आनन्द में ही विचरण करता है।

जब प्राणी प्रयत्न पूर्वक अपने अन्दर व बाहर के शत्रुओं को पराजित कर पवित्र हो जाता है तो उसका जीवन आनन्द मय हो जाता है। इस आनन्द को, इस खुशी को पाने के लिए हम अपनी भोगमयी प्रवृत्ति को बदल कर निःस्वार्थ प्रवृत्ति में विचरण करने के लिए सदा अपने अन्दर के शत्रुओं से संघर्ष करते रहते हैं। हमारी पवित्रता के कारण हमारे अन्दर की राक्षसी तथा भोगवादी प्रवृत्तियाँ कम्पित होती हैं, भयभीत होती हैं और हमारे शरीर को त्याग कर चली जाती हैं। इस प्रकार हम अपने अन्दर की राक्षसी प्रवृत्तियों से चल रहे युद्ध में विजयी होते हैं। यह प्रवृत्तियाँ पवित्र शरीर में रह ही नहीं सकती। जिस प्राणी को प्रभु की निकटता का अधिकार मिल जाता है, उसके पास यह प्रवृत्तियाँ रह ही नहीं सकतीं। इसलिए ज्यों ही हम पवित्रता को प्राप्त होते हैं, यह बुराइयाँ स्वयं भी भाग जाती हैं। यह बुरी प्रवृत्तियाँ हमें निर्धन बनाने वाली होती हैं किन्तु इनसे छूट कर हम प्रभु की निकटता के कारण अपार धन, ऐश्वर्य के भण्डारी बन जाते हैं।

2. आत्म सम्मान के लिए दिव्यगुणों वाले बनो :–

जब प्राणी आनन्दमयी अवस्था को प्राप्त हो जाता है तो पिता उसे उपदेश देते हुए कहता है कि हे जीव! तू अदिती का संस्पर्श प्राप्त करने का अधिकारी बन। तूने अपने अन्दर के शत्रुओं पर विजय पाकर अपने को पवित्र कर लिया है। इसलिए अदीना नाम की देव माता से तेरा सम्बन्ध जुड़ गया है। अब कृपणता के पास शक्ति नहीं रही कि वह तुझ पर अपना अधिकार बना सके। इस प्रकार यह अदीना देवमाता समयक रूप से तुझे जान लेती हैं। इस प्रकार न केवल तू अदिती से अच्छी प्रकार से, भली प्रकार से परिचय प्राप्त कर सके बल्कि यह अदिति भी तेरे से परिचय प्राप्त कर ले, तुझे भी अच्छे से जान ले। इस मेल–जौल के कारण तेरी अदिति से घनिष्टता बन जाए, निकटता बन जाए। दोनों सहचर बन जाएँ।

हे प्राणी! परमपिता परमात्मा ने तुझे अदिति की गोद दी है, उसकी गोद में तुझे बैठा दिया है। जब अदिति की गोद तुझे प्राप्त हो गयी है तो तू अभी आदीन नहीं हो सकता, दूसरों के आगे हाथ फैलाने की अब तुझे आवश्यकता ही नहीं। अब तू अक्रपण अर्थात निर्धन नहीं है। सब प्रकार की सुख–सुविधाएँ इस अदिति के कारण तुझे मिल गई हैं। जब तू किसी के आगे हाथ फैलाने की आवश्यकता ही नहीं समझेगा तो तेरे अन्दर किसी प्रकार की हीनता की भावना हो, यह सम्भव ही नहीं हो सकता। अतः तू अब आत्म सम्मान वाला बन गया है। इस कारण ही तेरे अन्दर दिव्य गुणों ने प्रवेश कर लिया है। अब तो तेरे लिए एक ही कार्य बचा है, वह यह कि जो दिव्य गुण तुझे मिले हैं, इन्हें बाँटने का यत्न कर।

3. अब तू सम्मानीय बन गया है :–

हे जीव! जब तूने दिव्य गुणों को प्राप्त कर लिया है। इन दिव्य गुणों को अपने अन्दर और अधिक विकसित करने में लगा है तो तू कभी भी धर्म के मार्ग पर चलते हुए भयभीत नहीं हो सकता, निरन्तर धर्म मार्ग पर आगे बढ़ने का ही यत्न करेगा। इस प्रकार सम्मानित होकर तू सबका आदरणीय बन जाएगा अर्थात् सब लोग तुझे आदर व सत्कार देने वाले बन जाएँगे।

4. शाकाहारी बन :–

जो प्राणी मांसाहारी होता है, उसमें अनेक प्रकार की बुराइयाँ आ जाती हैं, राक्षसी प्रवृत्तियाँ आ जाती हैं किन्तु तेरा जीवन तो वनस्पतियों पर आधारित है, इस कारण तेरे अन्दर यह सब बुराइयाँ तो आने का प्रश्न ही नहीं पैदा होता। तेरे इस शरीर को आन्नमय कोश कह सकते हैं। इसका कारण है कि तुम वनस्पतियों पर ही निर्भर है। तुमने मास मदिरा आदि का सेवन नहीं किया है। इस कारण तुम शुद्ध और पवित्र है। कोई भी विकृत प्रवृत्ति तेरे अन्दर प्रवेश नहीं कर सकती। इसे बनाये रखने के लिए सदा शाकाहारी भोजन पर ही निर्भर रह।

5. ज्ञान विज्ञान को ग्रहण कर :–

हे जीव! तू पवित्र है तथा इस पवित्रता को बनाये रखने के लिए तू सदा वेद की पवित्र वाणियों का स्वाध्याय करता रहता है। इस स्वाध्याय से तेरे अन्दर की पवित्रता, दिव्यता निरन्तर बटती ही चली जा रही है। इसलिए तुम सदा अपने अन्दर सब प्रकार के ज्ञान तथा विज्ञान को बटाता ही चला जाता है।

6. सदा अदीन देवमाता के सम्पर्क में रह

जब हमने अपने अन्दर व बाहर को शुद्ध व पवित्र कर देवमाता अदिति की गोद में बैठने का अधिकार पा लिया है तो फिर हमें और क्या चाहिये अर्थात् कुछ भी नहीं। अदिति की गोद में बैठकर हम विशाल मूल वाले बन गये हैं। भाव यह है कि हमने अपनी उन्नति के आधार को व्यापक बना लिया है, दृढ़ बना लिया है। हे जीवे! तूने अपने शरीर, अपने मन और अपने मस्तिष्क सबके विकास का ध्यान रखा है। इस कारण तेरा शरीर, मन व बुद्धि पवित्र व शुद्ध हो गई है। अब तुझे और अधिक ज्ञान देने की, उपदेश देने की मैं आवश्यकता नहीं समझता। बस अन्त में एक बार फिर तुझे स्मरण मात्र ही दिलाता हूँ कि तेरे साथ अदिति का सम्पर्क, अदिति की गोद सदा बनी रहे। इस प्रकार तू सदा अदीन देवमाता अदिति के सम्पर्क में रहते हुए अदीन ही बना रह।

लो राईज पाकेट–I
प्लाट F–61 सेक्टर–7 रामप्रस्थ ग्रीन 201010
जिला–गाज़ियाबाद
मो. 09718528068

☞ पृष्ठ 03 का शेष

भगवान शंकर और दयानन्द

मुँह के अन्दर जिह्वा हिले, और कुछ भी न हो। तब जिह्वा भी बन्द कर दो। कण्ठ में जाप करो। फिर कण्ठ में जाप करना भी बन्द कर दो। दो आँखों के मध्य में, भौहों के बीच माथे में जो स्थान है, जिसे भृकुटि कहते हैं वहाँ ध्यान करो। इस स्थान को प्रयाग भी कहते हैं। यहाँ इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना नाम की तीन नाड़ियाँ तीन नदियों के रूप में आकर मिलती हैं। इन नदियों को देखने का प्रयत्न करो। बार–बार प्रयत्न करने से नदियाँ दृष्टिगोचर होंगी, एक विशाल नदी में मिलती हुई प्रतीत होंगी। उस नदी के किनारे बैठ जाओ, वहाँ बैठकर ऊपर देखो। भृकुटि से ऊपर, सिर के उस भाग में जो मस्तक से ऊपर है जिसे ललाट कहा जाता है, वहाँ ध्यान लगाने से एक चमकता हुआ आकाश दिखाई देगा; उससे भी ऊपर चमकता हुआ सूर्य दिखाई देगा, उससे भी आगे शीतल प्रकाश वाला चन्द्रलोक भी दिखाई देगा, और यह सब–कुछ करते हुए आश्चर्यजनक दृश्य दिखाई देंगे।

यह है ध्यान–योग का सही और सीधा मार्ग। कहने को मैंने यह बात कुछ वाक्यों में कह दी, परन्तु इस पर अभ्यास करने में पर्याप्त समय लगेगा। समय लगे तो घबराओ नहीं, परिश्रम करते जाओ। अन्ततः उस लक्ष्य पर पहुँचोगे अवश्य।

एक था बाग, उसमें बहुत अच्छे–अच्छे आम लगे थे। बाग में बन्दर आते, आमों को खाने के लिए; बाग का माली उन्हें गुलेल मारता; बन्दर घायल होते, चिल्लाते, फिर मार खाते, फिर भागते। बन्दरों का सरदार बूढ़ा था। उसने सब बन्दरों को बुला कर कहा, "हम ऊँचे परिवार के लोग हैं, हम आमों के लिए बार–बार मार खायें तो क्यों? अच्छी बात तो यह है कि हम अपने वृक्ष लगायें, उन पर आम लगें तो सुख से खायें। फिर कोई पत्थर मारने वाला नहीं होगा, कोई रोकने वाला न होगा।" सब बन्दरों ने कहा, यह तो ठीक बात है। सबने मिल के आमों की गुठलियाँ पृथिवी में दबा दीं। उनको पानी दिया और उनके सिरहाने बैठ गये। एक दिन बैठे रहे, दो दिन बैठे रहे, परन्तु थे तो बन्दर! तीसरे दिन उन्होंने पृथिवी को खोद के देखना आरम्भ कर दिया कि गुठलियों में आम लगे या नहीं।

देखो, इस प्रकार नहीं करना! धैर्य से काम लो। परिश्रम करते जाओ। प्रयत्न करते जाओ, सफलता मिलेगी अवश्य। इसके पश्चात् भी न मिले तो निराश होकर नहीं बैठ जाओ। संसार में ऐसे भी लोग हैं, जो इस लक्ष्य में पहुँचने में आपकी सहायता कर सकते हैं। उनके पास जाओ, वे मन को स्थिर कर देंगे।

यह है 'शम' की सम्पत्ति को प्राप्त करने का दूसरा उपाय। तीसरा साधन यह है कि किसी व्यक्ति को, किसी भी वस्तु को बुरा न समझो, किसी को कुदृष्टि से न देखो। यदि तुम प्रत्येक स्थान, प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक वस्तु को बुरा कहते रहोगे, प्रत्येक बात में दोष निकालते रहोगे, हर समय दूसरों की आलोचना करते रहोगे, तो याद रखो कि तुम्हारा हृदय और मस्तिष्क भी वैसा ही बनता चला जायेगा। जैसा दृष्टिगोचर होगा, वैसा ही तुम्हारा मन बनता जायेगा।

एक कथा सुनिये! वीरान जंगल में एक सुन्दर मकान था। एक साधु ने उसे देखकर सोचा, 'कितना सुन्दर स्थान है यह! यहाँ बैठकर ईश्वर का ध्यान करूँगा।' एक चोर ने उसे देखा; सोचा, 'वाह! यह तो सुन्दर स्थान है। चोरी का माल यहाँ लाकर रखा करूँगा।' एक दुराचारी ने देखा; सोचा,' यह तो अत्यन्त एकान्त स्थान है। दुराचार करने के लिए इससे उत्तम स्थान और कहाँ मिलेगा?' एक जुआरी ने देखा; सोचा, 'अपने साथियों को यहाँ लाऊँगा। यहाँ बैठकर हम जुआ खेलेंगे।' एक ही मकान को अलग–अलग दृष्टिकोण होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति ने अलग–अलग रूप में देखा। जैसा दृष्टिकोण बनाओगे, वैसा अन्तःकरण बनेगा अवश्य। यदि तुम चाहते हो तो कि तुम्हारा अन्तःकरण अच्छा हो तो दृष्टिकोण अच्छा बनाओ।

क्रमशः

पत्र/कविता

आर्य वीर कहाओ तुम

कमर कस हो जाओ तैयार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
जग में अन्याय बढ़ा जब,
तुमने पापी मारे तब।।
था किया सुखी संसार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
वह लंका पति, व्यभिचारी।
हर लाया, जनकदुलारी।।
दिया रामचन्द्र ने मार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
कीचक ने पाप कमाया।
कृष्णा को व्यर्थ सताया।।
मारा था भीम ने जार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
दुर्योधन था अन्यायी।
किये तंग पांडव भाई।।
दिया मिटा दुष्ट, गद्दार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
जग में बढ़ रहे, कुचाली।
अब जागो तुम, बलशाली।।
फिर पकड़ो तुम तलवार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
मिलकरके कदम बढ़ाओ।
तुम राम, कृष्ण बन आजो।।
कर धर्म का बेड़ा पार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
जो दुष्टों से अड़जाते।
वे महावीर कहलाते।।
तुम हरो धरा का भार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
तुम वैदिक धर्म निभाओ।
ऋषि दयानन्द बन जाओ।।
कर सत्य धर्म विस्तार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
जो काम धर्म के आते।
वे स्वर्ग धाम को पाते।।
हो उनकी जय–जयकार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।
बन 'नन्दलाल' अब निर्भय।
गऊ माता की बोलो जय।।
नित करो वेद प्रचार, आर्य वीर कहाओ तुम।
कर दो जग का उद्धार, आर्य वीर कहाओ तुम।।

पं. नन्दलाल निर्भय, 'सिद्धान्ताचार्य'
आर्य सदन बहीन, पलवल (हरियाणा)
मो. 9813845774

पीड़ा अवैध सम्बंधों की छूट के क्रम में

भारतीय विशेषकर हिन्दू समाज संस्कार अनुगामी है। किसी भी स्त्री वर्ग को विभिन्न पुरुषों के सामने खड़ा कर दिया जाये अथवा पुरुष वर्ग को विभिन्न स्त्रियों के सामने खड़ा कर दिया जाये जिसमें विभिन्न नजदीकी रिश्तेदारियाँ भी हों उस समय उनके मन में एक ही समय में सब के प्रति अलग–अलग भाव पनपते है। अपवाद कुछ बने रहते है यही ऋषियों की देन परिवार तथा समाज को है।

धर्म श्रुति से तथा समाज स्मृति से चलता है। महापुरुषों के अनुभव देश काल अनुसार परिवर्तन करते कराते रहते है। प्रमुखता धर्म की रहती है। वे पुरुषों स्त्रियों को मर्यादा में रखते है। मर्यादा ही अनुशासन है। कानूनी डर इसका आधार नहीं, लोक परलोक तथा समाज परिवार की आँखों की शर्म भयकारक बनी रहती है। हिन्दू समाज में विवाह व्यवस्था पास्कर ग्रह्य सूत्र की देन है। विवाह समय सप्तपदियाँ पति–पत्नी के लिए आधार, अचार संहिता है। हिन्दू पुरुष लम्बे अंतराल तक पति–पत्नी तथा परिवार से विभिन्न कारणों से या आजीविका से दूर बने रहते है चाहे वे सेना, फौज, व्यापार, मजूदरी आदि के कारण स्वदेश में अथवा प्रदेश में ही हो सकते है। अनुपस्थिति में पति–पत्नी मर्यादा में रहते हुए परस्पर विश्वास बनाये रखते है और दोनों के मन में मिलन की आकांक्षा तड़प बनी रहती है। यही पति–पत्नी की परस्पर विश्वास आदान प्रदान भावना है।

काम–वासना हर प्राणी में शाश्वत है बदलाव की चाह भी बनी रहती है। पति–पत्नि के पास–पास रहते भी ये बनी रहती है। खुल्लम–खुल्ला संपर्क लोकेषणा फ्रेन्डशिप जो फो में बदल जाती है तथा भौतिकता की दौड़ मर्यादाहीन बनती है क्योंकि वर्तमान में मेरा रंग दे बसंती चोला का स्थान मेरा रंग दे करेन्सी चोला ने ले लिया है। लोग आज अनुचित कमाई से झोला भरने के लिए ना जाने क्यों अग्रसर हो रहे है। यहाँ तक कि पति–पत्नी के पास व्यापार, नौकरी से आने पर समय का आदान प्रदान भी नहीं हो पा रहा है। तनाव नशाखोरी, तम्बाकू सेवन, द्वेष दम्भ की आह के लिए चर्चा कितनी भी करो, सबके पास अपने अलग–अलग चैनल है।

मूल विषय है अवैध सम्बंध चाहे पुरुष करे या नारी दोनों ही होते है दण्ड के अधिकारी।

पति–पत्नी के अवैध सम्बंधों को कानूनी मान्यता से वैद्य बनाया जाना परिवार समाज में भरोसा का तोड़क है। ध्यान रहे कर्तव्य के प्रति जागरूकता ही फारवर्डनेस है तथा जिसका फल अधिकार रूप में मधुर रस है। इस बात में विदेशों की नकल अपने परिवार समाज देश मर्यादा के अनुकूल होनी चाहिये। फैलसा लेने वाले कृपया परिणाम अपने पर घटाके देख ले। भारत में एक पति पत्नीवृत धर्म यौन रोगों से मुक्ति देने का तरीका रहा है। कुछ अपवादों के कारण सब कुछ खुल्ला नहीं किया जा सकता है। हिन्दू धर्म शास्त्र के अनुसार पत्नी–पति परस्पर जीवन के लिए सहयोगी तथा उपयोगी हैं। खुल्लम–खुल्ला छूट देने से अपराध घटेंगे नहीं बढ़ेंगे। सरकार अपना काम करती है। समाज परिवार को आगे आकर चिंतन करना होगा जिससे ये मर्यादाहीन समाज भविष्य में तनाव, आत्म हत्या का कारण न बनें।

भगवान कृष्ण की नीति के अनुसार कुछ के लिये बहुत कुछ तथा बहुत कुछ के लिये सब कुछ बर्बाद नहीं किया जा सकता।

पं. जगदीश लाल शर्मा
नजफगढ़ नई दिल्ली
मो. 9911888101

****

आर्य समाज त्रैतवाद का समर्थक

आर्य समाज त्रैतवाद का समर्थक है जिससे आशय है ईश्वर–जीव–प्रकृति।

लम्बे समय से, आर्य जगत् के प्रथम पृष्ठ पर छपा हुआ होता है स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह अद्वैय है। स. प्र. समु. 2

आर्य समाज के बारे में कम जानकारी रखने वाले साधारण व्यक्ति इस वाक्य को पढ़कर यह मान सकता है कि आर्य समाज अद्वैतवाद का समर्थक है जबकि वह त्रैतवाद का समर्थक है।

अत मेरा सुझाव है कि अद्वैत वाले वाक्य की जगह त्रैतवाद वाला वाक्य लिखना आरम्भ किया जाए जिससे साधारण व्यक्ति भी यह समझ सकता है कि वैदिक धर्मी आर्य समाजी को त्रैतवाद का ही प्रचार–प्रसार करना चाहिए।

आई.डी. गुलाटी
नगर आर्य समाज
बुलन्दशहर

****

आर्य समाज, रेलवे रोड, अम्बाला शहर में 'सस्ता भोजन योजना' का शुभारंभ

आर्य समाज रेलवे रोड, अम्बाला शहर का वार्षिक चुनाव समाज के सभागार में संपन्न हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से डॉ. के.के. खुराना को प्रधान व डॉ. विकास कोहली को मंत्री चुना गया, उपप्रधान श्री गुरचरण सैनी व कोषाध्यक्ष श्री गुलशन चाँदना, उपमंत्री श्री ओ.पी. शर्मा, पुस्तकालय अध्यक्ष डॉ. आर. आर. सूरी को बनाया गया। इस चुनाव के पर्यवेक्षक (OBSERVER) श्री एच.आर. गंधार एवं श्री सतपाल आर्य थे।

इस अवसर पर श्री एच.आर. गंधार (उपप्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) ने आर्यजनों को संबोधित करते हुए बताया कि आर्य की जाति उसकी कर्तव्य निष्ठा है। प्रत्येक व्यक्ति जो अपना कर्म सच्चाई व लगन से करता है वह आर्य अर्थात् श्रेष्ठ है।

इसके पश्चात् श्री सतपाल आर्य (सहमंत्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) ने बताया कि जिस ज्ञान गंगा का प्रवाह महर्षि दयानन्द जी ने किया है उस ज्ञान को अग्रेषित करने के लिए हमें सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिए।

मंत्री डॉ. विकास कोहली ने समस्त आर्यजनों को बताया कि ज्ञान कि कोई सीमा नहीं होती, हम में भी सीखने की जिज्ञासा होना अत्यंत अनिवार्य है। महर्षि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में जिस ज्ञान को ईश्वर के स्वरूप अर्थात् जो हमारे हृदय में विराजमान है हमें उसी का अनुसरण करना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को कर्मों से आर्य बनने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

आर्य समाज रेलवे रोड, अम्बाला शहर में 'सस्ता भोजन सेवा' का शुभारंभ श्री एच. आर. गंधार एवं श्री सतपाल आर्य ने किया।

डी.ए.वी. दरभंगा रोड, मुजफ्फरपुर में भजन संध्या

तेज़ी से बढ़ते वैश्विक डीजिटल युग में वैदिक परंपराओं और संस्कारयुक्त आचरण को अक्षुण बनाए रखने हेतु यज्ञादि यज्ञ, मंत्रोच्चारण, भजन संध्या, प्रवचन, सुसंगति जीवन वृद्धि का आधार बने तभी वर्तमान युवा पीढ़ी राष्ट्र निर्माण में अपनी में अपनी महती भूमिका का निर्वाह कर सकती है। उक्त सारगर्भित विचार प्राचार्य एस.के. झा ने आयोजित भजन संध्या के भव्य आयोजन के दौरान

छात्रों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने छात्रों से संस्कारी अनुशासित एवं अध्यवसाय को मूलाधार बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। विद्यालय के संगीत शिक्षक सिद्विशंकर के संयोजन में भव्य भजन संध्या का आयोजन किया गया। प्रतिभागी छात्र–छात्राओं ने प्रेरक, कालजयी भजनों की प्रस्तुति सोनल, सौम्या, अनसुल पल्लव, अनुष्का सुप्रिया, स्वर्णिम, शाहिल, श्वेतांक, मयंक इत्यादि कई लोगों ने अपना योगदान दिया।

डी.ए.वी. रोपड़ में यज्ञ का आयोजन

डी.ए.वी. पब्लिक सीनियर सैकेंडरी स्कूल, रोपड़, पंजाब में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया है इस मास में पड़ने वाले बच्चों के जन्म दिवस और इस मास में श्रेष्ठ उपलब्धियों के लिए ईश्वर को धन्यवाद अर्थ किया गया। इस हवन यज्ञ में स्कूल के मैनेजर श्री रविंद्र तलवार विशेष रूप से शामिल हुए। प्रिंसिपल संगीता रानी और मैनेजर श्री रविंदर तलवार ने बच्चों को आशीर्वाद दिया और शिक्षा में अच्छा परिणाम लाने के लिए भी उन्हें प्रेरित किया

डी.ए.वी. समाना में एक दिवसीय समाज-विज्ञान कार्यशाला आयोजित

डी.ए.वी. स्कूल समाना में समाज–विज्ञान (सोशल – साइंस) की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में पंजाब के भिन्न–भिन्न डी.ए.वी स्कूलों के अध्यापकों ने भाग लिया जैसे डी.ए.वी पातड़ा मूनक, ककराला, पटियाला, बादशाहपुर तथा नाभा। यह कार्यशाला कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम पर आधारित थी। इस का संचालन क्लस्टर इंचार्ज डॉ. मोहनलाल शर्मा के निर्देशन में हुआ तथा इसमें कई विषय–विशेषज्ञों ने अपनी योग्यता के आधार पर अध्यापकों को समाज–विज्ञान

जैसे विषय को बच्चों के लिए रुचिकर और सुगम बनाने के लिए भिन्न–भिन्न आयामों को सुझाया। इन विशेषज्ञों में श्रीमती अमिता वालिया जो डी.ए.वी. समाना की समाज विज्ञान विषय की मुख्य संचालिका हैं। इनके अतिरिक्त श्रीमती गीता शर्मा, श्रीमती रजनी दीवान, श्रीमती रोमिता, श्रीमती उर्मिंदर तथा श्री सतीश कुमार विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर स्कूल के प्रधानाचार्य डॉ. मोहनलाल शर्मा ने आए हुए विशेषज्ञों का स्वागत किया तथा कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाएँ अध्यापकों के लिए बहुत आवश्यक हैं क्योंकि इन्हीं के माध्यम से उन्हें अपनी योग्यता को बढ़ाने का अवसर मिलता है तथा बच्चों के उत्तम परीक्षा परिणाम के लिए यह एक सफल कोशिश है जिसके लिए हम सदा प्रयत्न रत रहेंगे।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 07/08-11-2018

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय में यूनिवर्सिटी इंडस्ट्रीज लिंकेज कार्यक्रम

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालंधर में यूनिवर्सिटी इंड्रस्ट्रीज लिंकेज कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें उद्योग मिलन संगठन से जुड़े कॉरपोरेट सेक्टर के 30 से अधिक सीईओ ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान के उपकुलपति डॉ. राकेश महाजन, रजिस्ट्रार डॉ. सुषमा आर्य, डीन अकादमिक डॉ. देशबंधु गुप्ता, डीन वेल्फेयर डॉ. जसबीर ऋषि और कॉडिनेटर डॉ. राजेश खन्ना ने किया। उद्योग मिलन के कॉनविनर आशुतोष वधवा ने कहा कि विद्यार्थियों के लिए इनोवेशन, सोशल मीडिया, एनर्जी प्रदूषण, पैकेजिंग और कॉपोरेट सोशल रिस्पोंसिबिल्टी के क्षेत्र में काफी कुछ करने की गुंजाईश अभी है। कॉपोरेट सेक्टर में कई परेशानियाँ आए दिन देखने को मिलती है, जिसे संस्थान में पढ़ रहे विद्यार्थी नई खोज और इनोवेशन से उसका समाधान कर सकते हैं। इस तरह के कार्यक्रम संस्थान और इंड्रस्ट्री के बीच सेतु का काम करेंगे। इससे एक ओर इंडस्ट्री में आने वाली समस्याओं का निदान होगा, वहीं विद्यार्थियों को भी काफी कुछ सीखने का अवसर प्राप्त होगा। वी.सी. डॉ. महाजन ने कहा कि संस्थान के विद्यार्थी काफी इनोवेटिव हैं, पिछले कुछ समय में नित नये इनोवेशन और प्रोजेक्ट के माध्यम से विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा दिखाई है। आने वाले दिनों में कॉपोरेट सेक्टर के साथ मिलकर संस्थान के विद्यार्थी पढ़ाई के दौरान ही काम करेंगे ताकि विद्यार्थियों को केरियर बनाने के साथ–साथ अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिल सके। इस अवसर पर डॉ. चेतन वासुदेवा, डॉ. एम. पी. गर्ग, डॉ. विक्रम कंग, गगन, डॉ. नीशि, डॉ. राजकुमार सेठ सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

एल.आर.एस. डी.ए.वी. अबोहर में राष्ट्रीय एकता दिवस

एल.आर.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल अबोहर में सरदार वल्लभ भाई पटेल का जन्म उत्सव राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में उल्लास के साथ मनाया गया।

प्रातःकालीन प्रार्थना सभा में प्रिंसीपल श्रीमती स्मिता शर्मा द्वारा सभी स्टॉफ सदस्यों व विद्यार्थियों को राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने व सरदार वल्लभ भाई पटेल की दूरदर्शिता व उनके आदर्शों को जीवन में ग्रहण करने संबंधी प्रतिज्ञा करवाई गई।

इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रिंसीपल स्मिता शर्मा ने कहा कि राष्ट्र की स्वतंत्रता एवं एकता को संरक्षित और इसे सुदृढ़ करने के साथ ही लोगों में समर्पण की भावना को मजबूत बनाने के उद्देश्य से सरदार वल्लभ भाई पटेल के जन्मदिवस को 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के रूप मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय एकता का संदेश राष्ट्र और समाज के प्रत्येक हिस्से में पहुँच सके इस हेतु विद्यार्थियों को जागृत करना भी अति आवश्यक है।

इस अवसर पर अंग्रेज़ी विभाग की शिक्षिका श्रीमती प्रियंका वशिष्ठ द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल के जीवन पर विस्तारक प्रकाश डाला गया।

डी.ए.वी. अमृतसर में स्वामी विरजानंद जी को भावभीनी श्रद्धांजलि

स्वामी विरजानंद जी के जन्म दिवस पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर के विद्यार्थियों द्वारा सुबह की विशेष प्रार्थना सभा आयोजित की गई। स्कूल प्राँगण विद्यार्थियों के पावन शब्दों व भजनों से गूँज उठा।

विद्यार्थियों ने इस अवसर पर शांति व संतुष्टि के लिए यज्ञ का आयोजन किया व महान् दार्शनिक स्वामी विरजानंद जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी पर उनका ऐसा प्रभाव पड़ा कि कहा जाता था कि विरजानंद के बिना दयानन्द व दयानन्द के बिना वैदिक धर्म का कोई अस्तित्व नहीं है। ये स्वामी विरजानन्द जी ही थे जिन्होंने दयानन्द जी को जीवन के सही अर्थ व वेदों में छुपे हुए व सही अर्थ समझने में सहायता की। उन्होंने दयानन्द जी को वेद के सच्चे ज्ञान को फैलाने, अज्ञानता को दूर करने और सत्य व उदार भारत के सच्चे अर्थों पर रोशनी डालने के लिए प्रेरणा दी। विद्यार्थियों ने स्वामी जी के बताए रास्ते पर चलने व समाज से अज्ञानता व बुराइयाँ दूर करने का प्रण लिया।

रीजनल ऑफिसर पंजाब ज़ोन ए. डॉ. (श्रीमती) नीलम कामरा और स्कूल के मैनेजर डॉ. राजेश कुमार प्रि. डी.ए.वी. कॉलेज, हाथी गेट, अमृतसर ने विद्यार्थियों को स्वामी जी के दिखाए मार्ग व संस्कारों को आगे बढ़ाने की शिक्षा दी। उन्होंने कहा कि हमें अपने में सच्चे आर्य गुणों का विकास करके अच्छी जिंदगी जीनी चाहिए।

स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. (श्रीमती) नीरा शर्मा ने विद्यार्थियों को महान संतों के दिखाए रास्ते पर चलने का आह्वान किया।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**